हिन्दू धर्म - अपनी मूल शिक्षाओं, तर्क तथा विवेक की कसौटी पर प्रश्नोत्तर

लेखकः

डॉक्टर हैसम तलअत

हिन्दू धर्म - अपनी मूल शिक्षाओं, तर्क तथा विवेक की कसौटी पर

प्रश्नोत्तर

डॉक्टर हैसम तलअत

सारी प्रशंसा अल्लाह की है तथा दरूद एवं सलाम हो अल्लाह के रसूल पर, तथा उनके परिजनों, और साथियों, एवं उनके मार्ग पर चलने वालों और उनसे प्रेम रखने वालों पर। तत्पश्चात् :

वैसे तो हिन्दू धर्म को एक धर्म के रूप में जाना जाता है, लेकिन उसे एक जीवन पद्धति कहना अधिक उचित होगा।

दुनिया की कुल आबादी में हिन्दू धर्म को मानने वालों की संख्या 15 प्रतिशत है। इस तरह हिन्दुओं की संख्या एक अरब दो सौ मिलियन से अधिक है।

हिन्दू धर्म विभिन्न काल खंडों में परिवर्तन के दौर से गुज़रता रहा है।

वैदिक काल के बाद हिंदू धर्म में बौद्धिक, वैज्ञानिक और व्यवहारिक जटिलताएँ प्रवेश करने लगीं। इस किताब में हम इस प्रकार की कुछ जटिलताओं का उल्लेख करेंगे।

हाँ,

हिंदू धर्म वेदों की मूल शिक्षाओं से बहुत दूर हो गया और ऋषियों, भगवद्गीता तथा तंत्र शास्त्र की शिक्षाओं का अनुसरण करने लगा।

इस छोटी-सी किताब में मेरा प्रयास होगा कि हिंदू धर्म को बुद्धि, आधुनिक ज्ञान, दर्शन और वेदों की मूल शिक्षाओं, जो आज भी लोगों के सामने हैं, की कसौटी पर परखा जाए। मुझे विश्वास है कि वेदों के अंदर बचा हुआ सत्य और हिंदुओं की फ़ितरत में मौजूद सत्य की चिंगारी उनको सच्चे धर्म के मार्ग पर डालने के लिए काफ़ी हैं।

चारों वेद, हिंदुओं के सबसे पवित्र ग्रंथ हैं।

प्रवृति से मुराद वह उत्प्रेरक है, जो इन्सान के अस्तित्व में आने के उद्देश्य और उसके अंजाम पर ग़ौर करने की प्रेरणा

देता है तथा अल्लाह पर विश्वास रखने और उसके बताए हुए तरीक़े के मुताबिक उसकी बंदगी करने पर आमादा करता है।

जबकि सच्चे धर्म से मुराद वह संदेश, जो वेदों में बचे हुए सत्य को शामिल है। वह प्रवृति की आवाज़ और सारे संसार के लिए अल्लाह की वह्य (प्रकाशना) है। वह वही संदेश है, जो उपनिषद की शिक्षाओं में एकेश्वरवाद के प्रभावों के दर्शन कराता है।

मेरा प्रयास रहेगा कि इस संक्षिप्त पुस्तिका में वैदिक काल के हिंदू धर्म और आज के हिंदू धर्म के बीच एक तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया जाए।

क्योंकि हिंदू धर्म बहुत ज़्यादा बदल चुका है ...

हिंदू धर्म वेदों में मौजूद एकेश्वरवाद की बची-खुची साफ़-सुथरी शिक्षाओं से बहुत दूर जा चुका है। आपको आज के हिंदू धर्म में वहदतुल वजूद (ब्रह्मवाद) का अक़ीदा मिलेगा, जिसके अनुसार स्रष्टा सृष्टि में इस तरह समा जाता है कि खुद सृष्टि स्रष्टा बन जाती है। यह विचित्र अक़ीदा न सिर्फ़ वेदों की

स्पष्ट शिक्षाओं के विपरीत है, बल्कि विवेक एवं बुद्धि के भी विपरीत है। भला स्रष्टा हर चीज़ में कैसे समा सकता है? फिर इस प्रकार का अक़ीदा रखने वाला इन्सान कुछ अनुष्ठानों एवं साधनाओं द्वारा स्रष्टा तक पहुँचना चाहता है, जबकि वह खुद उसके अंदर ही समाया हुआ है!!

क्या यह एक स्पष्ट बौद्धिक जटिलता नहीं है?

दूसरी बात यह है कि वहदतुल वजूद (अद्वैतवाद) का अक़ीदा हक़ीक़त के सापेक्ष होने की बात मानने की ओर बुलाता है। मूर्तियों एवं पत्थरों की पूजा करने वाले सारे धर्म साथ में असल पूज्य को भी पूजते हैं। क्योंकि इस अक़ीदे के अनुसार असल पूज्य मूर्ति एवं पत्थर ही है, क्योंकि असल पूज्य हर चीज़ में समाया हुआ है और वही हर चीज़ है।

सच मानिए तो हक़ीक़त की यह सापेक्षता अर्थ एवं मूल्य को नष्ट कर देती है, इस बात को मैं अपनी इस किताब में स्पष्ट रूप से बयान करूँगा।

इन सारी बातों के साथ-साथ इस बात का भी ध्यान रखा जाए कि वेद स्पष्ट रूप से एक ऐसे पूज्य पर विश्वास रखने का आह्वान करते हैं, जो सृष्टि से भिन्न है। उसकी नज़र में सारी सृष्टियाँ अल्लाह के द्वारा रची गई हैं। अल्लाह की सृष्टियों में इतना विस्तार नहीं है कि वह उसमें समा सके।

वेद तथा ख़ास तौर से ऋगवेद कहता है : "हे परमेश्वर! ये दोनों सूर्य और पृथ्वी आपको व्याप्त नहीं हो सकते।"[1]

वेद से लिया गया यह एक स्पष्ट प्रमाण है, जो वहदतुल वजूद (अद्वैतवाद) के अक़ीदे को गलत सिद्ध करता है। उसकी नज़र में अल्लाह अपने सृष्टि से भिन्न है।

आज आपको हिंदू धर्म में आवागमन या पुनर्जन्म का अक़ीदा मिल जाएगा। इस अक़ीदे के अनुसार मरने के बाद इन्सान की आत्मा दूसरा रूप धारण कर लेती है और एक अन्य रूप में नए सिरे से जन्म लेती है। इस प्रकार, हर इन्सान

---

[1] http://stholistic.com/prayer/hindu/hol_hindu-samsara-and-karma.htm. इस वेबसाइट से बौद्ध धर्म से संबंधित एक पत्रिका निकलती है, जो बौद्ध और उसकी शिक्षाओं पर आधारित लेख प्रस्तुत करती है।

का इस जीवन से पहले एक पूर्ववर्ति जीवन रहा है और उससे पहले भी वह किसी न किसी जीवित रूप में रहता आया है। लेकिन इस अक़ीदे पर बहुत-से प्रश्न खड़े होते हैं। एक प्रश्न यह है कि अगर पुनर्जन्म का यह अक़ीदा सही है, तो शिशुओं का जन्म वयस्कों के समान मानसिक क्षमताओं के साथ क्यों नहीं होता?[1]

दूसरी बात यह है कि पुनर्जन्म के इस अक़ीदे का मतलब है, निरंतर रूप से बार-बार जन्म लेते रहना। लेकिन प्रश्न यह उठता है कि ऐसा कैसे हो सकता है, जबकि आधुनिक विज्ञान ने यह साबित कर दिया है कि जीवन एक आरंभ है। खुद हमारी इस धरती का भी आरंभ है। यह अनादिकाल से नहीं है।

तीसरी बात यह है कि यदि आवागमन का अक़ीदा सही होता, तो इस कायनात (ब्रह्माण्ड) में जीवित वस्तुओं की संख्या स्थिर होती, क्योंकि इनकी आत्माएँ एक रूप से दूसरे

---

[1] Cogan, Robert. (1998), Critical Thinking: Step by Step, University Press of America, pp. 202–203.

रूप में हस्तांतरित होती रहती हैं, लेकिन यह बात आज कोई इन्सान नहीं कहता!

लेकिन इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि वेद आवागमन की बात नहीं करते। श्री सत्यकाम विद्यालंकार ने कहा है : "आवागमन का अक़ीदा वेदों में नहीं है।और जो वेदों में इसके होने की बात करता है मैं उसे इसे साबित करने का चैलेंज करता हूँ।"[1]

विद्यालंकार की बात सही है, इसका सबसे अच्छा प्रमाण यह है कि हिंदू पुराने ज़माने से श्राद्ध करते आ रहे हैं, जिसका उद्देश्य होता है, मरे हुए लोगों की आत्माओं की संतुष्टि एवं शांति।

ऐसे में प्रश्न यह उठता है कि जब वे मरे हुए लोगों की आत्माओं की शांति की कामना कर रहे हैं, तो उनकी आत्माएँ दूसरा रूप कैसे धारण कर सकती हैं?

---

[1] आवागमन, पृष्ठ 104। 'दावह अल-हिंदूस इला अल-इस्लाम' नामी अरबी किताब के पृष्ठ 99 से उद्धरित।

आज के हिंदू धर्म की एक महत्वपूर्ण आस्था, कर्म पर विश्वास है। इस अवधारणा के अनुसार इन्सान को अपने पिछले कर्मों के अनुसार जीवन प्राप्त होता है। जिसके कर्म बुरे हैं, वह अगले जन्म में और निचले वर्ण में पैदा होगा और वह अधिक कठिनाइयों के साथ पैदा होगा।

इस तरह हिंदू धर्म के मानने वाले एक दुःख भोग रहे व्यक्ति को इस नज़रिए से देखते हैं कि उसके द्वारा भोगा जाने वाला दुःख उसके पिछले जन्म में किए हुए पापों का परिणाम है। दरअसल यह अवधारणा इन्सान के जीवन को चौपट कर देती है। यह मानवता की कोई सेवा करने के बजाय यह स्थापित करती है कि इन्सान के जीवन में जो भी कठिनाइयाँ हैं, वह उसके द्वारा एक और जीवन में किए गए अपराध का प्राकृतिक दंड हैं। सच मानें तो यह पिछड़ेपन, अत्याचार और वर्गवाद के साथ एक प्रकार का समझौता है।

लेकिन सबसे बड़ी आपत्ति यह है कि कर्म का यह अक़ीदा वेदों में कहाँ है?

वेदों में तो स्पष्ट रूप से बताया है कि अल्लाह बंदों को उनके कर्मों के अनुसार या तो जन्नत देगा यह जहन्नम। उनके अंदर इस बात का कोई उल्लेख नहीं है कि दूसरे रूप में नया जीवन मिलने वाला है।

ऋगवेद कहता है : "मुझ उस स्थान में अमर करो, जहाँ हर प्रकार के सुख एवं खुशियाँ हैं और जहाँ वह सारी चीज़ें मिलती हैं, जो दिल चाहें।"[1]

सामयिक हिंदू धर्म की एक मुख्य अवधारणा मोक्ष की अवधारणा है। मोक्ष नाम है, जन्म-मरण तथा आवागमन की बंधनों से मुक्त होकर ईश्वर में लीन हो जाने का। यह मान्यता जीवन के प्रति एक नकारात्मक अवधारणा पर आधारित है। इसके अनुसार जीवन से मुक्ति पाना ही जीवन का सबसे बड़ा उद्देश्य सिद्ध होता है।

यह विचार समाज के लिए ख़तरनाक है। यह इन्सान को भय मुक्त बना देता है। क्योंकि वह जो भी बुरे काम करे, नए

[1] ऋगवेद, मण्डल 9, सूक्त 113, मंत्र 9-11।

सिरे से एक बार फिर जन्म लेगा और आने वाले जन्म में मुक्ति प्राप्त कर लेगा।

यह विचार वैदिक शिक्षाओं के विपरीत भी है, जो स्पष्ट करती हैं कि अत्याचारियों एवं पापियों को एक विशेष स्थान में रखकर दंड दिया जाएगा। ऋग्वेद कहता है : "एक बहुत ही गहरा स्थान जो पापियों के लिए है।"[1]

अब यह बताएँ कि क्या इस स्थान का जीवन-मरण के चक्र से कोई संबंध है?

समकालीन हिंदू धर्म की सबसे बड़ी चुनौती की बात की जाए, तो वह है ब्रह्मांड की सृष्टि के संबंध में उसकी अवधारणा। आज के हिंदू धर्म का मानना है कि हमारा यह ब्रह्मांड विखंडित होता है और आकार लेता है तथा यह सिलसिला अनंतकाल तक जारी रहेगा।यह एक अजीब वैज्ञानिक त्रुटि है जो आधुनिक विज्ञान के उलट है।

---

[1] ऋगवेद, मण्डल 4, सूक्त 5, मंत्र 5।

आधुनिक विज्ञान यह कहता है कि इस ब्रह्मांड का एक निश्चित आरंभ है। उससे पहले अन्य ब्रह्मांड विद्यमान नहीं थे।

इस तरह विज्ञान की नज़र में ब्रह्मांड की रचना हुई है और उसकी रचना बिना किसी पूर्व नमूने के की गई है।

यही अवधारणा वेदों ने भी प्रस्तुत की है। वेदों के अनुसार एक अचानक प्रकट होने वाली इस दुनिया का जीवन है और दूसरा आख़िरत का जीवन है। लेकिन बाद में पुराणों आदि के माध्यम से हिंदू धर्म में जो दर्शन सामने आए, उनके अनुसार यह ब्रह्मांड विखंडित होने के बाद फिर से आकार ले लेता है और शाश्वत है।

इस तरह समकालीन हिंदू धर्म की यह अवधारणा वेदों की अवधारणा के भी विपरीत है, आधुनिक विज्ञान के भी विपरीत है और इस्लाम के भी विपरीत है, जिसने वही सत्य सामने रखा है, जो वेदों द्वारा प्रस्तुत किया गया था।

मुसलमानों का अक़ीदा जिसे अल्लाह ने पवित्र क़ुरआन में बयान किया है, यह है कि इस कायनात (ब्रह्माण्ड)

की सृष्टि इस अद्भुत तरीक़े से हुई है कि इसका पहले से कोई उदाहरण नहीं था। उच्च एवं महान अल्लाह ने अपनी किताब पवित्र क़ुरआन में कहा है : "वह आकाशों तथा धरती का अविष्कारक है। जब वह किसी बात का निर्णय कर लेता है, तो उसके लिए बस ये आदेश देता है कि "हो जा" और वह हो जाती है।" सूरा अल-बक़रा : 117

इस तरह इस्लाम की नज़र में देखें तो यह कायनात (ब्रह्माण्ड) इस तरह रची गई है कि पहले से उका कोई उदाहरण नहीं था।

आज विज्ञान भी यही कहता है और यही बात आज से चौदह सौ साल पहले एक ऐसे व्यक्ति ने बताई है जो बकरियां चराता था। और वह मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह -सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम- थे, जो इस्लाम के रसूल थे।

इस किताब में मैं बहुत-सी ऐसी आलोचनाओं पर चर्चा करूँगा, जिनका सामना हिंदू धर्म को करना पड़ता है। साथ में दुनिया, जीवन, प्रतिफल, दंड और जीवन के उद्देश्य के बारे में इस्लामी दृष्टिकोण भी प्रस्तुत करूँगा, जो कि वेदों की

बची हुई शिक्षाओं और प्रकृति के साथ पूर्ण रूप से मेल खाता है।

मैं यह भी बताते हुए आगे बढ़ूँगा कि किस तरह इस्लाम मानवता की ज़रूरत को देखते हुए इस बात का सबसे सटीक, विश्वस्त और आदर्श उदाहरण प्रस्तुत करता है कि हम जीवन कैसे बिताएँ, हमारे अस्तित्व का अर्थ और उद्देश्य क्या है? इस्लाम के दिए हुए ये उत्तर प्रकृति, विवेक एवं विज्ञान के अनुकूल हैं।

इस किताब में इस्लाम के सच्चे धर्म होने के कुछ प्रमाण और वेदों में उसके बारे में मौजूद कुछ शुभ संदेश भी नक़ल किए गए हैं। क्योंकि वेदों ने इस्लाम तथा अल्लाह के अंतिम नबी मुहम्मद -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- के बारे में कई शुक्ष संदेश दिए हैं और हिंदुओं को उनपर ईमान लाने का आह्वान किया है।

इस्लाम धरती में मौजूद अन्य धर्मों की तरह एक धर्म नहीं है। इस्लाम वह एकेश्वरवादी धर्म है, जिसके साथ अल्लाह ने तमाम नबियों को भेजा था। सारे नबी लोगों को एकेश्वरवाद

की ओर बुलाने के लिए आए थे। लेकिन आज की बात की जाए, तो इस्लाम के अतिरिक्त कोई भी धर्म विशुद्ध रूप से एकेश्वरवाद पर स्थापित नहीं है। उसके अतिरिक्त सारे धर्मों में अनेकेश्वरवाद की मिलावट पाई जाती है। मिलावट कम हो या अधिक।

अल्लाह इस्लाम के अतिरिक्त किसी धर्म को इन्सान से ग्रहण नहीं करेगा। उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है : "और जो भी इस्लाम के सिवा (किसी और धर्म) को चाहेगा, तो उसे उससे कदापि स्वीकार नहीं किया जाएगा और वे प्रलोक में क्षतिग्रस्तों में होगा।" सूरा आल-ए-इमरान : 85

अतः इस्लाम ही वह धर्म है, जिसके साथ अल्लाह ने सभी रसूलों को भेजा है।

इस्लाम की एक बुनयादी विशेषता यह है कि इसके अंदर अल्लाह के लिए समर्पण तथा केवल उसी एक पालनहार की उपासना का भाव मौजूद है और आज के हिंदू धर्म की तरह अल्लाह को किसी प्रकार का आकार देने की मनाही है।

फिर इस बात के साथ किताब समाप्ति की ओर अग्रसर हो जाती है कि एक इन्सान मुसलमान कैसे बनता है, इस्लाम का अर्थ क्या है और मानवता को उसकी ज़रूरत क्यों है?

अब हम अल्लाह का नाम लेकर इस पुस्तक का आरंभ करते हैं...

1- हिंदू धर्म क्या है?

हिंदू धर्म एक धर्म या अधिक सही मायने में एक जीवन पद्धति है। यह कुछ अनुष्ठानों, प्रतीकों, उपासनाओं, पवित्र ग्रंथों और संसार तथा अस्तित्व संबंधी अवधारणाओं का नाम है।[1]

सैकड़ों सालों की लंबी यात्रा के दौरान और विभिन्न धर्मों की जटिलताओं को अपने अंदर समाहित करते हुए हिंदू धर्म ने इस प्रकार आकार लिया है कि वह अपने अंदर एक विविधतापूर्ण और कभी-कभी विरोधाभासी विश्वास प्रणाली रखता है। उसे इससे कोई दिक़्क़त भी नहीं है। आज का हिंदू धर्म न एक अक़ीदा रखता है, न एक संदर्भ रखता है और न ऐसी कोई एक किताब जिसे सब के लिए मानना ज़रूरी हो।

यद्यपि वेद हिंदुओं के सबसे पवित्र ग्रंथ हैं, लेकिन हिंदू, जैसा कि हम इस पुस्तक में दिखाएँगे, आश्चर्यजनक हद तक उनसे भिन्न हो गए हैं। उन्होंने वेदों के विपरीत ऐसी विविध

[1] हिंदू धर्म का अध्ययन (The Study of Hinduism), अरविंद शर्मा।ژ

धारणाओं और भिन्न विचारों को स्वीकार कर लिया है, जिनका आरंभिक वैदिक युग से कोई लेना-देना नहीं है।

हिंदू धर्म का लक्ष्य सामान्य रूप से दुख से छुटकारा पाना है। हम बाद में बताएँगे कि उनकी अवधारणा में दुख से कैसे छुटकारा पाया जाए और कैसे उन्होंने मोक्ष के विषय में वेदों के सिद्धांत का उल्लंघन किया, जिनमें सत्य के कई अवशेष मौजूद हैं।[1]

---

[1] Hinduism : Beliefs and Practices, Author : Jeaneane Fowler.

2- इस धर्म की उत्पत्ति अपनी इन जटिलताओं के साथ कैसे हुई?

हिंदू धर्म का नाम लेते ही भारत का दृश्य सामने आता है। भारत का राष्ट्र जलवायु, इतिहास, जटिलताएँ तथा परंपराएँ।

यह धर्म बड़ी हद तक भारत तक ही सीमित है। दुनिया में इस धर्म के मानने वालों की 95% भारत में ही रहता है।[1]

हिंदू धर्म की नींव वेदों की विरासत पर उठी, लेकिन दुर्भाग्य से सैकड़ों सालों के बीच इसमें अलग-अलग दर्शनों, विश्वासों, ग्रंथों और अवधारणाओं की मिलावट होती गई। वैदिक काल के बाद इसने ऋषि-मुनियों, तंत्र साहित्य तथा भगवद्गीता का अनुसरण करना शुरू कर दिया।

लगभग 1500 ईसा पूर्व से लेकर वर्ष 500 ईस्वी तक, इनमें से कई धारणाएँ और दर्शन वेदों पर इस हद तक प्रभावित

---

1 http://www.pewforum.org/files/2012/12/globalReligion-tables.pdf

हो गए कि हम आज धरातल पर इन धारणाओं और दर्शनों के अलावा और कुछ नहीं देखते हैं।

3- हिंदू मान्यता क्या है?

आज का हिंदू धर्म बहुत बड़ी संख्या में देवी-देवताओं को मानता है। इसकी मान्यता के अनुसार अनगिनत देवी-देवता हैं। इसके बावजूद इसके अनुयायी एक ईश्वर पर विश्वास रखते हैं।

उनका मानना है कि ईश्वर उन सारे आकारों में समाहित है, जिनको वे पवित्र मानते हैं।

कुछ लोगों की धारणा यह है कि हिंदुओं का एक ईश्वर पर विश्वास रखना और यह मानना कि वह जिन आकारों की पूजा करते हैं, वह भगवान के ही रूप हैं, मूर्ति पूजा नहीं है।

लेकिन यह एक बड़ी भूल है।

यह मान्यता कि पूजे जाने वाले विभिन्न आकार एक ईश्वर के अलग-अलग रूप हैं, मूर्ति पूजा की मूल धारणा है, जो तमाम नबियों की शिक्षाओं तथा वेदों की शिक्षाओं के विपरीत है।

नबियों का विरोध करने वाले और वेदों का विरोध करने वाले सारे बहुदेववादी एक अल्लाह पर विश्वास रखते थे। लेकिन वे मूर्तियों को ईश्वर के रूप के तौर पर मानते थे। ऐसे में हम देखते हैं कि बहुदेववादियों के अल्लाह के अस्तित्व को मानने और उसे एक मानने की भावना ने उनको अल्लाह के प्रति, उसके नबियों के प्रति और वेदों के प्रति अविश्वास के दायरे से बाहर नहीं निकाला, क्योंकि उनकी श्रद्धा मूर्तियों के प्रति भी थी।

वेद स्पष्ट रूप से मूर्ति बनाने, उनकी निकटता प्राप्त करने या उनको पवित्र मानने को हराम कहते हैं।

यजुर्दवेद कहता है : "जो व्यक्ति एक ईश्वर के अतिरिक्त संभूति (सृजन) का उपासक है, वह घोर अंधकार में प्रवेश करते हैं और नरक की यातना को अनंत काल भोगेंगे।"[1]

[1] यजुर्वेद, सूक्त 40, मंत्र 9।

अतः जो इन मूर्तियों को, जिनसे आज का हिंदू धर्म भरा पड़ा है, उपास्य मानता है, वह वेदों के अनुसार हमेशा नरक में रहेगा।

वेद यह भी कहता है : "जो सबका स्वामी अन्तर्यामी है, जिसे किसी अन्य पूजे जाने वाले की सहायता की कोई आवश्यक्ता नहीं है। वही इस बात का अधिकार रखता है कि मनुष्य उसी की उपासना करे। और जो लोग ईश्वर के अतिरिक्त अन्य किसी को उपास्य स्वीकार करते हैं वही लोग कुपथ पर हैं और कठिनाइयों में पड़ने वाले हैं, जो बड़े-बड़े घोर दुःखों को सदा प्राप्त होते हैं।"[1]

बल्कि भगवद्गीता में तो यहाँ तक है : "देवताओं को पूजने वाले देवताओ को प्राप्त होते हैं, पितरों को पूजने वाले पितरों को प्राप्त होते हैं, भूतों को पूजने वाले भूतों को प्राप्त होते हैं, और मेरा पूजन करने वाले भक्त मुझको ही प्राप्त होते हैं।"[2]

[1] ऋगवेद, मण्डल 1, सूक्त 7, मंत्र 9।

[2] भगवद्गीता, 9-25।

हिंदू धार्मिक ग्रंथों के ये उद्धरण स्पष्ट रूप से हिंदुओं को एक ईश्वार की वंदना करने और इन मूर्तियों की पूजा छोड़ देने की ओर बुला रहे हैं। यहाँ तक कि महर्षि दयानन्द सरस्वी कहते हैं : "वेदों में एक शब्द भी ऐसा नहीं मिलता, जो पत्थर आदि से बने मूर्तियों की उपासना को सिद्ध करता हो।"

हिंदुओं ने वेदों में उल्लिखित एकेश्वरवाद की मान्यता को छोड़ कर ऐसी बातों पर चलना शुरू कर दिया, जो उनके बाद के युगों में सामने आईं।

क़ुरआन, जिसे अल्लाह ने अपने प्रिय नबी मुहम्मद -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- पर उतारा था, इस बात की पुष्टि करता है कि मूर्तियों की पूजा करने वाले भी समझते हैं कि वे एक ईश्वर पर आस्था रखते हैं, लेकिन सच्चाई यह है कि वे अपनी इस मूर्ति पूजा के कारण अल्लाह के प्रति अविश्वास रखने वाले सिद्ध हो जाते हैं।

उच्च एवं महान अल्लाह ने पवित्र क़ुरआन में कहा है : "और यदि आप उनसे प्रश्न करें कि आकाशों तथा धरती को किसने पैदा किया? तो अवश्य कहेंगे कि उन्हें बड़े

प्रभावशाली, सब कुछ जानने वाले ने पैदा किया है।" सूरा अज़-ज़ुमर : 38 एक और स्थान में उसने कहा है : "यदी आप उनसे पुछें कि इन्हें किसने पैदा किया है? तो वे अवश्य यही उत्तर देंगे कि अल्लाह ने।" सूरा अज़-ज़ुख़रुफ़ : 87

इससे मालूम यह हुआ कि क़ुरआन तथा वेद इस बात पर एकमत हैं कि मूर्ति पूजा से इन्सान अल्लाह के प्रति अविश्वास रखने वाला सिद्ध हो जाता है।

उच्च एवं महान अल्लाह ने पवित्र क़ुरआन में कहा है : "तुम तो अल्लाह के सिवा बस उनकी वंदना कर रहे हो, जो मूर्तियाँ हैं तथा तुम झूठ घड़ रहे हो। वास्तव में, जिन्हें अल्लाह के सिवा तुम पूज रहे हो, वे तुम्हारे लिए जीविका देने का अधिकार नहीं रखते हैं। अतः, अल्लाह के पास जीविका की खोज करो तथा उसकी इबादत (वंदना) करो और उसके कृतज्ञ बनो। उसी की ओर तुम फेरे जाओगे।" सूरा अल-अनकबूत : 17

अतः अल्लाह के पास रोज़ी तलाश करो और केवल उसी की इबादत करो। हम सब को उसी की ओर लौट कर जाना है।

आज इस धरती के ऊपर इस्लाम के अतिरिक्त एक भी ऐसा धर्म नहीं है, जो एकेश्वरवाद पर क़ायम हो और अनेकेश्वरवाद के सारे रूपों को नकारता हो।

इसलिए प्रत्येक हिंदू को पूरी गंभीरता से बिना किसी पक्षपात के इस्लाम पर चिंतन करना चाहिए और इस धर्म की मूल संपत्ति यानी एकेश्वरवाद की अवधारणा को समझना चाहिए और चिंतन करना चाहिए कि यह उसकी फ़ितरत (प्रवृत्ति) तथा वेदों की शिक्षाओं के अनुरूप है या नहीं है?

अल्लाह के भेजे हुए सभी रसूलों का आह्वान था, केवल एक अल्लाह की इबादत करना और इसके लिए सारी मूर्ति पूजा से किनारा करते हुए अल्लाह के नबियों और विशेष रूप से मुहम्मद -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- की शिक्षाओं पर अमल करना ज़रूरी है।

4- हिंदू धर्म में एक ईश्वर को दसियों आकार देने का आरंभ कैसे हुआ?

वेदों के युग के बाद वर्तमान हिंदू धर्म की सबसे बड़ी समस्या इस धारणा में है कि एक ईश्वर के अलग-अलग गुणों को प्रकट करने के लिए अलग-अलग देवी-देवता का होना आवश्यक है। इस प्रकार हर देवी-देवता अपनी जगह अलग-अलग ईश्वर हो गए।

हिंदुओं का मानना है कि हर ईश्वरीय गुण के लिए एक देवता है, जो उस गुण को साकार करता है।

अतः उनके यहाँ सृष्टि करने वाला (एक ईश्वर) हुआ जिसका नाम है :

ब्रह्मा : जो इस संसार का रचयिता है।

तथा विष्णु : जो इस संसार को सुरक्षा प्रदान करने वाला (ईश्वर) है।

और शिव : जो इस संसार के संहारक (विनाश करने वाला ईश्वर) है।[1]

यह मान्यता स्पष्ट रूप से इन्सान की अक़्ल, प्रवृत्ति और वैदिक शिक्षाओं के विपरीत है। क्योंकि गुणों की बहुलता से व्यक्तियों की बहुलता अनिवार्य नहीं होती।

कभी-कभी एक ही व्यक्ति बुद्धिमान भी होता है, शक्तिशाली भी होता है और शिष्ट भी।

इससे यह आवश्यक नहीं होता कि उस एक व्यक्ति को उसके अलग-अलग गुणों के कारण अलग-अलग व्यक्ति माना जाए।

क्योंकि यहाँ जो इन्सान बुद्धिमान है, वही शक्तिशाली भी है और शिष्ट भी।

---

[1] The Encyclopedia of Eastern Philosophy and Religion by Stephan Schuhmacher. Page 397.

यहाँ यह याद रहे कि इन्सानों के लिए जो उदाहरण दिए जाते हैं, वह अल्लाह के उपयुक्त और अनुकूल नहीं होते हैं। अल्लाह के लिए सर्वोत्तम उदाहरण हैं।

इसी तथ्य की पुष्टि वेद भी करते हैं। ऋग्वेद में है : "एक ही सत्वरूप परमेश्वर का विद्वज्जन विभिन्न प्रकार से वर्णन करते हैं। उसी को इंद्र, मित्र, वरुण तथा अग्नि कहा गया है।"[1]

ईश्वर के नामों तथा गुणों के संबंध में वेदों में बहुत-से मंत्र हैं।

ये सारे नाम और सारे गुण बस एक ईश्वर के हैं।

यही वेदों की शिक्षा है और यही इस्लामी मान्यता भी है। इस्लामी शिक्षाओं के अनुरूप उच्च एवं पवित्र अल्लाह के बहुत-से अच्छे-अच्छे नाम और ऊँचे गुण हैं। उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है : "और तुम्हारा सत्य पूज्य एक ही पूज्य है। उस अत्यंत दयालु, दयावान के सिवा कोई पूज्य नहीं।" सूरा अल-बक़रा : 163

---

[1] ऋगवेद, मण्डल 1, सूक्त 164, मंत्र 46।

यहाँ हम देखते हैं कि अल्लाह ही रहमान (अत्यंत दयालु) है और वही रहीम (दयावान) है।

उच्च एवं महान अल्लाह ने पवित्र क़ुरआन में कहा है : "वह अल्लाह ही है, जिसके अतिरिक्त नहीं है कोई सच्चा वंदनीय। वह सबका स्वामी, अत्यंत पवित्र, सर्वथा शान्ति प्रदान करने वाला, रक्षक, प्रभावशाली, शक्तिशाली बल पूर्वक आदेश लागू करने वाला, बड़ाई वाला है। पवित्र है अल्लाह उससे, जिसे वे (उसका) साझी बनाते हैं।" सूरा अल-हश्र : 23

ये सारे नाम और सारे गुण बस एक अल्लाह के हैं।

हिंदू धर्म की दूसरी समस्या विभिन्न ईश्वरीय गुणों को अलग-अलग मूर्तियों के रूप में आकार देने में है। जबकि इस धारणा को सही मान लिया जाए, तो यह संसार सुरक्षित नहीं रह सकता।

यही कारण है कि इस्लाम ने इस प्रकार की मान्यताओं का खंडन किया है और बताया है कि यदि सचमुच अल्लाह के साथ अन्य पूज्य होते, तो इस संसार की व्यवस्था नष्ट हो

जाती। "यदि उन दोनों में अल्लाह के सिवा अन्य पूज्य होते, तो निश्चय दोनों की व्यवस्था बिगड़ जाती। अतः पवित्र है अल्लाह, अर्श (सिंहासन) का स्वामी, उन बातों से, जो वे बता रहे हैं।" सूरा अल-अंबिया : 22

यदि अल्लाह के साथ और भी अन्य पूज्य होते, तो आकाशों एवं धरती की व्यवस्था नष्ट हो जाती।

"और यदि सत्य उनकी मनमानी का अनुसरण करने लगे, तो आकाश तथा धरती और जो कुछ उनके बीच है, सब अस्त-व्यस्त हो जाए, बल्कि हमने उन्हें उनकी शिक्षा दे दी है, फिर (भी) वे अपनी शिक्षा से विमुख हो रहे हैं।" सूरा अल-मूमिनून : 71।

5- हिंदू सृष्टिकर्ता और सृष्टि के बीच के संबंध को कैसे देखते हैं?

आज के अधिकतर हिंदू इस सिद्धांत पर विश्वास रखते हैं कि संसार में केवल एक ईश्वर के सिवा और कुछ नहीं है। उनके यहाँ सृष्टिकर्ता सृष्टि में समाहित रहता है और ईश्वर अपनी प्रत्येक सृष्टि में वास करता है। इस तरह वद्यमान चीज़ें और उनको अस्तित्व में लाने वाले एक ही हैं।[1]

जबकि यह सिद्धांत विज्ञान, विवेक, अनुभव और वेदों के विपरीत है।

'ईश्वर अपनी सृष्टि में ही समाया हुआ है', इस अवधारणा में बहुत-सी वैज्ञानिक और तार्किक आपत्तियाँ हैं। कुछ आपत्तियाँ इस प्रकार हैं :

पहली आपत्ति : हिंदू मान्यता के अनुसार ईश्वर का वास हर चीज़ में है। अगर ऐसी बात है, तो ईश्वर में समाहित

---

[1] Encyclopedia of Hinduism. by Constance Jones, James D. Ryan. Page : 315.

होने के लिए मोक्ष प्राप्त करने के उद्देश्य से तपस्या करने का क्या अर्थ है?

आप किसी ऐसी वस्तु तक कैसे पहुँच सकते हैं, जो आपके अंदर मौजूद है? आपकी तो मान्यता ही यही है कि ईश्वर आपके अंदर वास करता है और आप ईश्वर में समाहित हैं।

दूसरी आपत्ति : उनकी इस मान्यता के अनुसार कि संसार में केवल एक ईश्वर के सिवा कुछ नहीं है, इन्सान से होने वाली त्रुटियाँ तथा पाप भी ईश्वर ही हैं। उनके यहाँ ईश्वर ही त्रुटि है, पाप है, व्यभिचार है और वध है। क्योंकि वह हर वस्तु में विद्यमान है। हर वस्तु वही है। फिर, त्रुटियों एवं पापों से छुटकारे का क्या मतलब है?

वे सांसारिक इच्छाओं और वासनाओं से दूर रहने के लिए इतने उत्सुक क्यों दिखते हैं?

क्या पाप उनके अद्वैतवाद की इस मान्यता के दायरे में नहीं आता?

क्या दुनिया ही ईश्वर नहीं है?

वर्तमान हिंदू धर्म की इस धारणा के अनुसार अच्छा काम करने के लिए उत्सुक होने का कोई औचित्य नहीं है।

लेकिन हम देखते हैं कि सब लोग अच्छा काम करने की इच्छा रखते हैं और इसे ज़रूरी समझते हैं। क्या ऐसा नहीं है?

दरअसल अच्छे काम की इच्छा स्वच्छ प्रवृत्ति के आह्वान की प्रतिक्रिया है, जो अद्वैतवाद के दर्शन के गलत होने का प्राकृतिक प्रत्यक्ष प्रमाण है।

तीसरी आपत्ति : वहदतुल वजूद (अद्वैतवाद) का अक़ीदा हक़ीक़त के सापेक्ष होने की बात मानने की ओर बुलाता है। चुनांचे मूर्तियों एवं पत्थरों की पूजा करने वाले सारे धर्म साथ में असल पूज्य को भी पूजते हैं। क्योंकि इस अक़ीदे के अनुसार असल पूज्य मूर्ति एवं पत्थर ही है, क्योंकि असल पूज्य हर चीज़ में समाया हुआ है और वही हर चीज़ है।

सत्य की यह सापेक्षता अर्थ एवं मूल्य को नष्ट करने की ओर ले जाती है। इसके अनुसार हर चीज़ सही हो जाती है।

इसके साथ यह भी मिला लीजिए कि अद्वैतवाद की यह अवधारणा इस प्रश्न का उत्तर नहीं देती की यह संसार आया कहाँ से?

यह मानना कि सृष्टिकर्ता ही सृष्टि है, विवेक की दृष्टि से बिलकुल ग़लत है, क्योंकि इससे किसी चीज़ के प्रकट होने का संबंध उसी के प्रकट होने से होना लाज़िम आता है।

यह एक बड़ी अजीब विरोधाभासी और विवेक की दृष्टि से असंभव बात है।

भला कोई वस्तु, जो अभी तक प्रकट न हुई हो, अपने ही प्रकट होने का कारण कैसे हो सकती है?

चौथी आपत्ति : वैज्ञानिक रूप से यह बात सिद्ध है कि यह संसार इसकी सारी चीज़ें नश्वर हैं। इस बात को सारे समझदार लोग मानते हैं।

सब मानते हैं कि यह संसार, इसकी सारी ऊर्जा, पदार्थ, स्थान और समय नश्वर हैं...

इसी प्रकार अनगिनत प्रमाणों द्वारा यह साबित है कि इस संसार का एक आरंभ है। विज्ञान यह नहीं कहता है कि पहले एक संसार था और फिर दूसरा संसार प्रकट हुआ।

जब ऐसा नहीं है, तो हम अद्वैतवाद को कैसे सही मान सकते हैं?

अद्वैतवाद की अवधारणा अगर सही होती, तो संसार की अनंतता या कम से कम पदार्थ की अनंतता लाज़िम आती।

आश्चर्य की बात यह है कि समकालीन हिंदू इस बात पर ज़ोर देते हैं कि भौतिक संसार शाश्वत है, क्योंकि अद्वैतवाद को सही क़रार देने के लिए ऐसा कहना ज़रूरी है।

स्वामी विवेकानंद कहते हैं : "स्थान पर न समय का प्रभाव होता है और न वह नश्वर है।"[1]

आज के हिंदुओं को भौतिक संसार के शाश्वत होने की बात इसलिए कहनी पड़ी, ताकि अपनी अद्वैतवाद की अवधारणा का बचाव कर सकें।

हालाँकि उनको ऐसा करना नहीं चाहिए था। अद्वैदवा की अवधारणा पहले उनके यहाँ थी ही नहीं। ऐसा दरअसल शैतान के बहकावे से हुआ। वह आदम की संतान को नबियों के धर्म से विचलित करने का कोई भी मौक़ा हाथ से जाने नहीं देता।

उच्च एवं महान अल्लाह ने एक हदीस-ए-क़ुदसी में कहा है : "मैंने अपने तमाम बंदों को एकेश्वरवादी बनाकर पैदा किया है। लेकिन शैतान ने उनके पास आकर उनको उनके धर्म से विचलित कर दिया, उनके लिए उन चीज़ों को हलाल कर

[1] हिंदू धर्म, स्वामी विवेकानंद, पृष्ठ 61-63। अरबी किताब "दावह अल-हिंदूस इला अल-इस्लाम" लेखक : डॉक्टर इबराहीम बिन अब्दुल ग़फ़ूर, प्रकाशक : दार ईलाफ़ लिन-नश्र व अत-तौज़ी, पृष्ठ : 122 से उद्धरित।

दिया जो मैंने उनपर हराम की थीं और उनको उन चीज़ों को मेरा साझी बनाने का आदेश दिया, जिनके साझी होने का मैंने कोई प्रमाण नहीं उतारा है। "[1]

इस प्रकार सारे इन्सान एकेश्वरवाद पर क़ायम थे। लेकिन उनको शैतान ने इन अविश्वास पर आधारित बातों में डाल दिया।

अल्लाह के नबी -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने फ़रमाया है : "शैतान आदम की संतान को बहकाने के लिए उसके मार्गों पर बैठा हुआ है।"[2]

शैतान इन्सान को बहकाने के बहाने ढूँढता रहता है। इन्सान को मुक्ति एकेश्वरवाद तथा उपासना के उसी मार्ग पर चलकर मिल सकती है, जो नबियों ने दिखाई है।

वेदों ने स्पष्ट रूप से कहा है कि संसार सृष्टि है, उसका एक आरंभ है

---

[1] सहीह मुस्लिम, हदीस संख्या : 2865।

[2] सहीह सुनन नसई, हदीस संख्या : 3134।

और ईश्वर अपनी सृष्टि से अलग अस्तित्व रखता है, उसके अंदर वास नहीं करता।

ऐसे में सोचने की बात यह है कि हिंदूओं ने अद्वैतवाद की अवधारणा को भला कैसे ग्रहण कर लिया?

ऋग्वेद कहता है : "हे परमेश्वर! ये दोनों सूर्य और पृथ्वी आपको व्याप्त नहीं हो सकते।"[1]

वेद से लिया गया यह एक स्पष्ट प्रमाण है, जो वहदतुल वजूद (अद्वैतवाद) के अक़ीदे को गलत सिद्ध करता है। उसकी नज़र में अल्लाह अपनी सृष्टि से भिन्न है। सूर्य तथा चांद पूज्य नहीं हैं।

ऋग्वेद एक अन्य स्थान में कहता है : "ईश्वर वह है जिसने दिन और रात बनाए। वही है जो संसार और उसकी समस्त चीज़ों का स्वामी है। वही है जिसने सूर्य, चंद्रमा, पृथ्वी तथा आकाश की रचना की।"[2]

---

[1] ऋगवेद, मण्डल 1, सूक्त 10, मंत्र 8।

[2] ऋगवेद, मण्डल 10, सूक्त 190, मंत्र 2-3।

अद्वैतवाद तथा भौतिक संसार के शाश्वत न होने का इससे स्पष्ट बयान और क्या हो सकता है?

यजुर्वेद कहता है : "उससे पहले किसी वस्तु की रचना नहीं हुई। वह हमारा सृष्टिकर्ता और स्वामी है। वह हर वस्तु को जानता है।"[1]

अल्लाह से पहले किसी वस्तु की रचना नहीं हुई। अतः वह प्रथम है। जबकि सृष्टि की रचना अल्लाह ने की है। और यह संसार शाश्वत नहीं है। "वह महान है। धरती तथा आकाश का स्वामि है।"[2]

पवित्र क़ुरआन भी इसी स्पष्ट तथ्य को स्थापित करता है। अल्लाह ने अपने नबी मुहम्मद पुत्र अब्दुल्लाह को 1400 वर्ष से अधिक समय पहले यह वह्य की थी कि अल्लाह अपनी सृष्टि से पृथक है और अपने अर्श पर बिराजमान है। न वह अपनी सृष्टियों के अंदर वास करता है और न कोई सृष्टि उसके अंदर समाहित होती है।

---

[1] यजुर्वेद, सूक्त 32, मंत्र 13।

[2] ऋगवेद, मण्डल 1, सूक्त 100, मंत्र 1।

उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है : "अल्लाह वही है, जिसने आकाशों तथा धरती को और उन दोनों के मध्य की सारी चीज़ों को छह दिनों में पैदा किया। फिर अर्श पर स्थित हो गया। उसके सिवा तुम्हारा कोई संरक्षक नहीं है और न कोई अनुशंसक (सिफ़ारिशी) है, तो क्या तुम शिक्षा नहीं लेते?" सूरा अस-सजदा : 4

इस तरह नबियों की असल मान्यता तथा मूल धर्म एवं शरीयत यही है कि अल्लाह एक है, अपने सृष्टियों से पृथक है और उनके अंदर वास नहीं करता।

अद्वैतवाद की अवधारणा पर पाँचवीं आपत्ति यह है कि यह अवधारणा एक महत्वपूर्ण प्रश्न का उत्तर नहीं देती कि यह संसार कहाँ से आया?

इस दर्शन के अनुसार इस संसार की उतपत्ति कैसे हुई?

फिर, इस दर्शन को सबसे पहले किसने प्रस्तुत किया था?

और इसका प्रमाण क्या है?

बहुत-से प्रश्न और आपत्तियों ने इस अवधारणा को घेर रखा है, जो अवधारणा आधुनिक विज्ञान, तर्क, वेद तथा नबियों के लाए हुए धर्म के विपरीत है।

6- जीवन तथा मृत्यु के बारे में हिंदू धर्म का क्या दृष्टिकोण है?

आज का हिंदू धर्म पुनर्जन्म पर तथा एक अंतहीन जन्मचक्र पर आधारित है। हिंदू अवधारणा के अनुसार हम जन्म तथा मरण के एक गोल चक्र में घूम रहे हैं। हर पैदा होने वाला पहले किसी न किसी रूप में मौजूद था और मृत्यु के बाद किसी न किसी रूप में मौजूद रहेगा। यह सिलसिला चलता ही रहेगा। हिंदू धर्म में इसी को समसार कहा जाता है। लेकिन पुनर्जन्म के इस मसले में कई तार्किक एवं वैज्ञानिक आपत्तियाँ हैं। कुछ आपत्तियाँ इस प्रकार हैं :

पहली आपत्ति : इसे Tertullian's objection कहा जाता है। वह कहता है : "अगर पुनर्जन्म की यह अवधारणा सही है, तो बच्चा पैदा होते समय व्यस्क लोगों की तार्किक शक्तियों के साथ क्यों पैदा नहीं होता?"[1]

---

[1] Cogan, Robert. (1998), Critical Thinking: Step by Step, University Press of America, pp. 202–203.

तीसरी बात यह है कि यदि आवागमन का अक़ीदा सही होता, तो इस कायनात (ब्रह्माण्ड) में जीवित वस्तुओं की संख्या स्थिर होती, क्योंकि इनकी आत्माएँ एक रूप से दूसरे रूप में हस्तांतरित होती रहती हैं, लेकिन यह बात आज कोई समझदार इन्सान नहीं कहता!

यह सिद्ध हो चुका है कि एक समय था जब पृथ्वी का अस्तित्व नहीं था, और एक समय था जब पृथ्वी पर जीवित प्राणी नहीं थे, और एक समय था जब जीवित प्राणी इस संख्या में नहीं थे, उनकी संख्या बहुत कम थी, और फिर समय के साथ उनकी संख्या बढ़ती गई। इस बात पर आज मानव जाति की आम सहमति है।

एक समय ऐसा था, जब लोगों की संख्या उससे कम थी, जितनी आज है।

इस तरह इस बात पर आम सहमति है कि लोगों की संख्या ठहरी हुई नहीं है। ऐसे में आवागमन की उक्त धारणा को कैसे सही माना जा सकता है?

तीसरी आपत्ति : इस विचार को मानने वालों को छोड़कर कोई दूसरा व्यक्ति क्यों नहीं मिलता, जिसे अपना पिछला जीवन याद हो?

Ruth Simmons (रुथ सिमन्ज़) नाम की एक अमरीकी महिला थी, जिसने Bridey Murphy (ब्रैडी मर्फी) नाम की एक अन्य महिला का पुनर्जन्म खुद के रूप में होने का दावा किया था और उसने आयरलैंड में उन्नीसवीं शताब्दी में ब्रैडी मर्फी के रूप में अपनी पिछली यादों को प्रस्तुत करना शुरू कर दिया था। लेकिन शोधकर्ताओं द्वारा रुथ के जीवन की छानबीन के बाद पता चला कि आयरलैंड से उसकी एक पुरानी पड़ोसन है, जिसका नाम ब्रैडी मर्फी है, उसने ब्रैडी से आयरलैंड की यादें प्राप्त कीं और उनको अपने जीवन से जोड़ दिया और यह दावा कर बैठी कि वह खुद ही ब्रैडी थी।"[1]

[1] Ruth Simmons के हालात : https://www.ncbi.nlm.nih.gov/pubmed/12116612 (वेबसाइट डॉ. फ़ौज़ कुर्दी के लेखों से उद्धरित)।

आवागमन एक भ्रम एवं कल्पना है और विज्ञान एवं अनुभव के विपरीत है।

दार्शनिक विश्वकोश के प्रधान संपादक तथा न्यू यॉर्क विश्वविद्यालय के प्रोफेसर Paul Edwards (पॉल एडवर्ड्ज़) कहते हैं : "आवागमन एक कोरी कल्पना है, जो आधुनिक विज्ञान के विपरीत है।"[1]

इन्सान को मरने के बाद दूसरा जीवन हरगिज़ प्राप्त नहीं होगा।

वेदों ने हमेशा इस तथ्य की पुष्टि की है। वेदों के अंदर आवागमन तथा संसार का कोई ज़िक्र नहीं है।[2]

श्री सत्यकाम विद्यालंकार कहते हैं : "आवागमन की अवधारणा वेदों में नहीं है। इस अवधारणा को मानने वालों को मैं इसे वेदों से साबित करने की चुनौती देता हूँ।"[1]

---

[1] Edwards, Paul. (2001), Reincarnation: A Critical Examination, Prometheus Books.

[2] Yuvraj Krishan: Bharatiya Vidya Bhavan, 1997.

विद्यालंकार की बात सही है, इसका सबसे अच्छा प्रमाण यह है कि हिंदू पुराने ज़माने से श्राद्ध करते आ रहे हैं, जिसका उद्देश्य होता है, मरे हुए लोगों की आत्माओं की संतुष्टि एवं और उनको शांति पहुँचाना।

ऐसे में प्रश्न यह उठता है कि जब वे मरे हुए लोगों की आत्माओं की शांति की कामना कर रहे हैं, तो उनकी आत्माएँ दूसरा रूप कैसे धारण कर सकती हैं?

पवित्र क़ुरआन ने, जिसे अल्लाह ने अपने नबी मुहम्मद -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- पर उतारा है, बार-बार पैदा होने की धारणा रखने वालों का खंडन किया है, जिन्होंने कहा था : "जीवन तो बस सांसारिक जीवन है, हम मरते-जीते हैं और हम फिर जीवित नहीं किए जाएँगे।" सूरा अल-मूमिनून : 37 अल्लाह ने अपने पवित्र ग्रंथ में इस प्रकार

[1] आवागमन, पृष्ठ 104, अरबी किताब "दावह अल-हिंदूस इला अल-इस्लाम" लेखक : डॉक्टर इबराहीम बिन अब्दुल ग़फ़ूर जिसे डाक्टरेट की डिग्री प्राप्त करने के लिए लिखी गई, प्रकाशक : दार ईलाफ़ लि-अन-नश्र व अल-तौज़ी, पृष्ठ : 99 से उद्धरित।

के लोगों का खंडन करते हुए कहा : "क्या उन्होंने नहीं देखा कि हम ने उनसे पहले बहुत-से समुदायों का विनाश कर दिया। वे उनकी ओर दोबारा फिरकर नहीं आएँगे।" सूरा यासीन : 31

अतः कोई भी मरने वाला प्राणी दुनिया में दोबारा लौटकर आ नहीं सकता।[1]

उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है : "वे उस स्वर्ग में मौत नहीं चखेंगे, प्रथम (सांसारिक) मौत के सिवा।" सूरा अद-दुख़ान : 56

यही मुसलमानों का अक़ीदा (विश्वास) है और यही वेद का भी अक़ीदा है, जिसे हिंदुओं ने छोड़ दिया है।

आवागमन की अवधारणा पर चौथी आपत्ति : उनका दावा है कि जीवन का उद्देश्य ईश्वर में विलय हो जाना या मोक्ष की प्राप्ति है, ताकि जीवन चक्र से मुक्ति मिल जाए। इसका मतलब यह हुआ कि बार-बार जन्म लेना यातना है।

---

[1] क़ुरतुबी अपनी तफ़सीर में कहते हैं : "यह आयत उन लोगों का खंडन करती है, जो कहते हैं कि कुछ सृष्टियाँ मौत के बाद क़यामत से पहले दोबारा लौटकर आएँगी।"

लेकिन यह कौन कहता है कि बार-बार जन्म लेना यातना है?

अगर आप लोगों से पूछेंगे कि क्या आप दोबारा जन्म लेकर एक बार और जीवन अनुभव लेना चाहते हैं, तो बहुत-से लोग बिना किसी संकोच के हाँ में उत्तर देंगे।

दूसरी बात यह है कि जीवन के यातना होने का यह नकारात्मक दृष्टिकोण झूठा है। सच्चाई यह है जीवन में बहुत-सी अच्छी बातें और अनगिनत नेमतें हैं।

इसलिए मोक्ष एक ऐसी वस्तु से काल्पनिक मुक्ति का नाम है, जिसकी कोई वास्तविकता नहीं है।

पाँचवीं आपत्ति : आवागमन का दर्शन किसी भी अपराध या पाप की परवाह न करने पर उकसाता है। यह अपराध की अनुमति देता है। क्योंकि इसके अनुसार इन्सान आने वाले किसी जीवन में आवश्यक रूप से मोक्ष प्राप्त कर ही लेगा, इसलिए उसे इस जीवन का आनंद लेना चाहिए।

यह बात किसी भी आपराधिक कार्य को अंजाम देने के साथ एक प्रकार के समझौते को चित्रित करती है। शायद इसी कारण से भारत को दुनिया में अपराध और विशेष रूप से बलात्कार के उच्चतम दरों वाले देशों में गिना जाता है।[1]

भारत में सामूहिक बलात्कार की दर भी सबसे अधिक है।

[1] https://en.wikipedia.org/wiki/Rape_in_India

7- हिंदुओं में आवागमन की अवधारणा का स्रोत क्या है?

कोई यह नहीं बता सकता कि इन विचारों की उत्पत्ति कैसे हुई, इनकी स्थापना किसने की और उसके पास इनके प्रमाण क्या थे?

वेदों में आवागमन का कोई प्रमाण नहीं मिलता। उसके बारे में एक शब्द भी नहीं है। यह विचार बाद में सामने आने वाले पौराणिक दर्शनों का नतीजा हैं।

हो सकता है कि यह विचार किसी ऋषि मुनि के मन में, बिना खाए-पिए लंबे समय तक बैठे रहने के कारण, जैसा कि प्राण दर्शन से संबंधित अनुष्ठानो में होता है, एक कल्पना के रूप में आया हो।

वैसे भी हम सब जानते हैं कि प्राण दर्शन से संबंधित अनुष्ठानों में बिना कुछ खाए-पिए लंबे समय तक एक ही अवस्था में बैठना भी शामिल है।

खाए-पिए बिना एक निश्चित स्थिति में घंटों तक यह पूर्ण मौन, समय के साथ रक्त शर्करा (Blood Glucose) में कमी के कारण मस्तिष्क के आयनों में असंतुलन का कारण बनता है, इसलिए एंडोर्फिन का अनियंत्रित स्राव होता है और वास्तविक विभ्रांति की स्थिति पैदा हो जाती है।[1]

ऋषि मुनियों के मन में आवागमन का जो विचार आया और जिसे उन्होंने पुराणों में प्रस्तुत किया, वह विभ्रांति तथा मानसिक संवेदनहीनता से अधिक निकट है।

यह बात आधुनिक विज्ञान से भी सिद्ध हो गई है। आपने देखा कि नेशनल सेंटर फॉर बायोटेक्नोलॉजी रिसर्च वेबसाइट के अनुसार, जो अमरीका की सरकारी वेबसाइट है और दुनिया के सबसे बड़े चिकित्सा अनुसंधान संदर्भों में से

---

[1] https://www.ncbi.nlm.nih.gov/pubmed/8931651 (नेशनल सेंटर फॉर बायोटेक्नोलॉजी रिसर्च वेबसाइट। यह अमरीका की सरकारी वेबसाइट है और दुनिया के सबसे बड़े चिकित्सा अनुसंधान संदर्भों में से एक है।)

एक है, उक्त स्थिति में लंबे समय तक एक अवस्था में रहने के कारण रक्त में ग्लूकोज़ की कमी विभ्रांति की ओर ले जाती है।[1]

इमाम ज़हबी कहते हैं : "एक ज्ञानहीन इबादतगुज़ार व्यक्ति जब सांसारिक सुखों को त्याग देता है, दुनिया से अलग हो जाता है, भूखा रहने लगता है, मांस तथा फलों को छोड़ देता है और रूखे-सूखे पर गुज़ारा करने लगता है, तो उसके दिल में विकृत विचार आने लगते हैं, उसके अंदर शैताना का आना-जाना शुरू हो जाता है और वह समझने लगता है कि उसकी अल्लाह तक पहुँच हो गई है, उसे अल्लाह का संबोधन प्राप्त हो गया है और उसका स्थान बड़ा ऊँचा हो गया है। इस प्रकार शैतान उसके ऊपर हावी होकर उसके दिल में तरह-तरह की गलत-सलत बातें डालने लगता है।"[2]

यही कारण है कि इस्लाम ने इस प्रकार की तपस्या तथा इस तरह के आत्म उत्पीड़न से सावधान किया है।

---

[1] पूर्व उद्धरण।

[2] सियर आलाम अन-नुबला, अहमद बिन अबुल हवारी की जीवनी। डॉ. फ़ौज़ कुरदी के वेबसाइट से उद्धरित।

क्योंकि इस प्रकार का आत्म उत्पीड़न समय गुज़रने के साथ-साथ धारणाओं में बिगाड़ तथा धर्म विकृति पैदा होने का कारण बनता है।

उच्च एवं महान अल्लाह ने पवित्र क़ुरआन में कहा है : "(हे नबी!) इन (मिश्रणवादियों) से कहिए कि किसने अल्लाह की उस शोभा को हराम (वर्जित) किया है, जिसे उसने अपने सेवकों के लिए निकाला है? तथा स्वच्छ जीविकाओं को?" सूरा अल-आराफ़ : 32 तथा अल्लाह के रसूल -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने फ़रमाया है : "तुम अपने ऊपर सख़्ती न करो, वरना अल्लाह तुम्हारे ऊपर सख़्ती करेगा। कुछ लोगों ने अपने ऊपर सख़्ती की, तो अल्लाह ने भी उनपर सख़्ती कर डाली। अब तुम गिर्जाओं तथा यहूदियों के पूजा स्थलों में उसके अवशेष देख सकते हो।" "और संसार त्याग को उन्होंने स्वयं बना लिया, हमने उसे उनके ऊपर अनिवार्य नहीं किया।"[1]सूरा अल-हदीद : 27

---

[1] सुनन अबू दाऊद, हदीस संख्या : 4904। यह हदीस सहीह है।

इस आत्म उत्पीड़न ने ऐसा मतिभ्रम उत्पन्न किया, जिसने वेद विरोधी इन धारणाओं को जन्म दिया, जो आज हिंदू धर्म की मूल बातों में शामिल हो चुकी हैं।

इसके विपरीत यदि हम उन चमत्कारों को देखें, जो अल्लाह अपने नबियों को प्रदान करता है, तो हम पाएँगे कि ये चमत्कार अचानक सामने आते हैं, इनके लिए पहले से कोई तैयारी नहीं होती, इन्हें लोग अपनी आँखों से देख सकते हैं और दूसरे इन्सान इस प्रकार के चमत्कार प्रस्तुत नहीं कर सकते।

यही फ़र्क़ है नबियों की सूचनाओं तथा हिंदू साधु-संतों की सूचनाओं के बीच।

8- हिंदू इस संसार को किस दृष्टि से देखते हैं?

हिंदू दर्शन के अनुसार यह संसार विघटित होता है तथा फिर से प्रकट होता है और यह सिलसिला निरंतर रूप से जारी है।

सो ब्रह्मांड बनता है, फिर विलीन होता है, फिर बनता है, और इसी तरह यह होता रहता है।

लेकिन संसार के विघटित होने तथा फिर रूप धारण करने की यह धारणा वैज्ञानिक रूप से गलत है।

क्योंकि वैज्ञानिक रूप से इस संसार से पहले अन्य किसी संसार का वजूद नहीं था। बल्कि इसे बिना किसी पूर्व उदाहरण के रचा एवं गढ़ा गया है।

यही अक़ीदा मुसलमानों का भी है, जिसे एक ऐसे व्यक्ति ने आज से 1400 वर्ष पहले प्रस्तुत किया था, जो चंद क़ीरातों (मुद्रा) के बदले में मक्का वालों की बकरियाँ चराया करता था। उसका नाम मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह था। वह अल्लाह का रसूल और इस्लाम का नबी था। अल्लाह ने

उसकी ओर वह्य की कि यह संसार बिना किसी पूर्व उदाहरण के रचा एवं गढ़ा गया है। उच्च एवं महान अल्लाह ने पवित्र क़ुरआन में कहा है : "वह आकाशों तथा धरती का आविष्कारक है। जब वह किसी बात का निर्णय कर लेता है, तो उसके लिए बस ये आदेश देता है कि "हो जा" और वह हो जाती है।" सूरा अल-बक़रा : 117

9- हिंदू धर्म के अनुसार मानव शरीर की रचना किन तत्वों से हुई है?

हिंदू धर्म के अनुसार मानव शरीर की रचना पाँच तत्वों से हुई है, जो इस प्रकार हैं : जल, पृथ्वी, वायु, अग्नि तथा आकाश।

सारा संसार और उसकी सारी चीज़ें इन्हीं पाँच तत्वों से बनी हैं।

इन पाँच तत्वों में से हर तत्व के मुक़ाबले में कोई न कोई ग्रह है। मसलन मंगल ग्रह आग्नेय है, तो शनि भौमिक। इसी तरह मानव शरीर के हर अंग के मुक़ाबले में कोई न कोई तत्व है। मसलन तिल्ली भौमिक है, तो हृदय आग्नेय।

संसार की सारी चीज़ों को पाँच तत्वों के अनुसार बाँटा जाता है, यहाँ तक कि समय (काल) को भी। उनके यहाँ बीमारी इन पाँच तत्वों के संतुलन में होने वाली विकृति का नाम है।

पाँच तत्वों के विचार का प्रचार-प्रसार प्राणायाम के माध्यम से हुआ, जिस में लंबे समय तक भूखे रहने और मौन धारण करके बैठे रहने जैसे कार्य किए जाते हैं।

दुर्भाग्य से, पाँच तत्वों का यह विचार दुनिया में फैल गया और उसके नतीजे में Energy Therapy (ऊर्जा चिकित्सा) से संबंधित बहुत-सी बातें सामाने आईं।

ऊर्जा चिकित्सा, माइक्रोबायोटिक, फेंग शुई, क्रोमोथेरेपी आदि पद्धतियाँ इन पाँच तत्वों के नियंत्रण पर आधारित हैं।

उनके निकट इन पाँच तत्वों के नियंत्रण से जीविका प्राप्त होती है और बुराइयाँ दूर रहती हैं।

हिंदू मंदिरों में आज इन पांच तत्वों को नियंत्रित करने के लिए मालिश की जाती है, यह समझकर कि यह कई बीमारियों का इलाज है।

लेकिन पाँच तत्वों के इस विचार का न तो विज्ञान से कोई संबंध है

और न भौतिकी तथा चिकित्सा से कोई लेना-देना।

सच्चाई यह है कि विज्ञान इसे और इससे जुड़ी प्रथाओं को एक तरह का अंधविश्वास, भ्रम और धोखाधड़ी के रूप में देखता है।

पाँच तत्वों के विचार को छद्म ज्ञान के रूप में वर्गीकृत किया जा चुका है।[1]

इससे जुड़ी प्रथाओं को कल्पनाओं और भ्रम के रूप में आँका जा चुका है।[2]

हो सकता है कि पाँच तत्वों का विचार किसी ऋषि मुनि के मन में उसी तरह आया हो, जिस तरह कि बार-बार जन्म लेने और आत्माओं के पुनर्जन्म का विचार आया था, क्योंकि इसका कोई तर्कसंगत, वैज्ञानिक या तार्किक प्रमाण नहीं है।

---

[1] "Energy – (according to New Age thinking)", The Skeptic's Dictionary, 2011-12-19.

[2] "Some Notes on Wilhelm Reich, M.D", Quackwatch.org, 15-02-2002.

यह केवल एक काल्पनिक विचार है।

समस्या यह है कि इस विचार से जुड़ी हुई प्रथाएँ, मूर्ति पूजा पर आधारित टोने-टोटके तथा ग्रहों, आकृतियों, प्रतीकों, रंगों और तावीज़ों से संबंध हैं, जिनपर अल्लाह ने कोई प्रमाण नहीं उतारा है।[1]

इस्लाम ने आधुनिक विज्ञान से पहले ही इन पाँच तत्वों के विचार से जुड़े इन कार्यों से सावधान किया है। दरअसल ये कार्य सही चिकित्सा में देरी का कारण बनते हैं, मानव जीवन को वास्तविक जीवन के समानांतर भ्रम की दुनिया की ओर ले जाते हैं और अल्लाह को छोड़ दूसरों से संबंध स्थापित करने का कारण बनते हैं। यही कारण है कि इस्लाम ने इन कार्यों से बहुत ज़्यादा सावधान किया है। उच्च एवं महान अल्लाह ने हदीस-ए-क़ुदसी में कहा है : "मेरे कुछ बंदों ने मुझपर विश्वास के साथ और कुछ ने अविश्वास के साथ सुबह की। जिसने कहा कि अल्लाह के अनुग्रह तथा उसकी रहमत से हमपर बारिश

[1] मैंने "आध्यात्मिक नास्तिकता" के नाम से एक अलग तथा पूरी किताब लिखकर ऊर्जा चिकित्सा पर चर्चा की है।

हुई है, वह मुझपर ईमान रखने वाला एवं नक्षत्र का इनकार करने वाला है और जिसने कहा कि अमुक अमुक नक्षत्र के कारण हमें बारिश मिली, वह मेरी नेमत का इनकार करने वाला तथा रक्षत्रों पर ईमान रखने वाला है।"

जिसने नक्षत्रों तथा उनके इन्सान पर प्रभाव को माना और विश्वास रखा कि जीविका की प्राप्ति में उनका अमल-दख़ल होता है, उसने अल्लाह के प्रति अविश्वास व्यक्त किया। इसके विपरीत जिसने अल्लाह पर विश्वास रखा, उसने मानव जीवन में घटने वाली घटनाओं में नक्षत्रों के अमल-दख़ल का इनकार किया।

अल्लाह के रसूल -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने कहा है : "निश्चय ही झाड़-फूंक करना, तावीज़-गंडे बाँधना और पति-पत्नी के बीच प्रेम पैदा करने के लिए जादू करना शिर्क है।"[1]

---

[1] सहीह अल-जामे, हदीस संख्या : 1632।

इसलिए मुसलमान पाँच तत्वों के प्रभाव और उनसे जुड़ी हुई चीज़ों, जैसे टोने-टोटकों एवं तावीज़ आदि को नहीं मानता।

इस्लाम ने जादुई चिट्ठी, ज्यामितीय आकृतियाँ, ऊर्जा पेंडुलम और पाँच तत्वों से जुड़ी हुई इस प्रकार की अन्य चीज़ें बनाने और उनसे लाभ या हानि का विश्वास रखने को शिर्क तथा अल्लाह के प्रति अविश्वास घोषित किया है।

अल्लाह के रसूल -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने एक व्यक्ति के हाथ में पीतल का एक कड़ा देखा, तो उससे पूछा : "यह क्या है?" उसने उत्तर दिया : इसे मैंने कमज़ोरी की बीमारी के कारण पहना है। यह सुन आपने कहा : यह तुम्हारी कमज़ोरी को और बढ़ाने का काम करेगा। इसे फेंक दो। क्योंकि अगर तुम इसे पहनकर मरोगे, तो तुम्हें इसी के हवाले कर दिया जाएगा।"[1]

[1] सहीह इब्न-ए-हिब्बान, हदीस संख्या : 6085।

एक अन्य रिवायत में है : "अगर तुम इसे पहनकर मर गए, तो कभी सफल नहीं हो सकते।"[1]

शैख़ अल-इस्लाम इब्न-ए-तैमिया कहते हैं : "ऐसी आकृतियाँ बनाना, जिनसे लाभ की प्राप्ति तथा हानि से बचाव की आशा हो, महा शिर्क है।"[2]

बल्कि भगवद्गीता में तो यहाँ तक है : "देवताओं को पूजने वाले देवताओ को प्राप्त होते हैं, पितरों को पूजने वाले पितरों को प्राप्त होते हैं, भूतों को पूजने वाले भूतों को प्राप्त होते हैं, और मेरा पूजन करने वाले भक्त मुझको ही प्राप्त होते हैं।"[3]

अतः जिसने भी अल्लाह के अतिरिक्त इन आकृतियाँ से अपने हृदय को जोड़ा , वह गैरुल्लाह (अल्लाह के अतिरिक्त) को पूजने वाला है।

---

[1] यह हदीस सहीह है। इसे हैतमी मक्की ने रिवायत किया है। देखिए : अज़-ज़वाजिर 1/166।

[2] मजमू अल-फ़तावा, खंड 9, पृष्ठ 34।

[3] भगवद्गीता, 9-25।

और उसका ठिकाना वेदों के अनुसार जहन्नम है। यजुर्दवेद कहता है : "जो व्यक्ति अल्लाह के अतिरिक्त संभूति (सृजन) की उपासना करता है, वह अंधकार में प्रवेश करता है, और वह अनंत काल के लिए जहन्नम (नरक) की यातना का स्वाद चखेगा।"[1]

हमारे पाक रब ने कहा है : "बात ये है कि सब अधिकार अल्लाह ही को हैं।" सूरा अल-राद : 31

जबकि अल्लाह के रसूल -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने फ़रमाया है : "जब माँगो, तो केवल अल्लाह से माँगो और मदद माँगो तो केवल अल्लाह से मदद माँगो।"[2]

यही कारण है कि मुसलमान पाँच तत्वों, ग्रहों, जादुई आकृतियों और तावीज़ों के प्रभाव के मिथक को नहीं मानता। वह इन चीज़ों को बुत परस्ती, गुमराही (पथभ्रष्टता), धोखगधड़ी और पाखंड समझता है।

---

[1] यजुर्वेद, सूक्त 40, मंत्र 9।

[2] सुनन तिर्मिज़ी, हदीस संख्या : 2516। यह हदीस सहीह है।

10- हिंदू समाज का स्वरूप कैसा है?

हिंदू समाज, उसके आवागमन पर विश्वास और कर्म की धारणा की दृष्टि से निश्चित रूप से एक वर्ग पर आधारित समाज है।

क्योंकि हाँ एक बुरा इन्सान इस जन्म में जिस वर्ग में पैदा हुआ है, अगले जन्म में उससे कमतर वर्ग में पैदा होगा।

इस प्रकार एक व्यक्ति अगर पीड़ित है, तो वह उसका हक़दार भी है।

यह दरअसल असहाय एवं पीड़ित लोगों के मुक़ाबले में अत्याचार को भरपूर सपोर्ट करना और मजबूर लोगों को बेसहारा छोड़ देना है ... यह अत्याचार के साथ स्पष्ट सामान्यीकरण है।

हिंदू धर्म में मानव समाज चार श्रेणियों में बँटा हुआ है, जो इस प्रकार हैं :

1- ब्राह्मण : पुजारी एवं शिक्षक।

2- क्षत्रिय : योद्धा एवं शासक।

3- वैश्य : किसान एवं व्यापारी।

4- शूद्र : सेवा प्रदाता।

इस वर्णव्यवस्था में सबसे निचला स्थान अछूत शूदरों का है, जो उनकी नज़र में सफ़ाई एवं सेवा आदि गंदे काम करते हैं।

हर इन्सान का वर्ण उसके कर्म, पहनावा तथा भोजन को तय करता है।

शादी विवाह भी एक वर्ण के लोगों के बीच में ही हो सकती है।

अतः हर इन्सान को उसी वर्ण के दायरे में रहकर मरना है, जिसमें वह पैदा हुआ है।

वर्णव्यवस्था की यह अवधारणा, जैसा कि मैंने कहा, आवागमन तथा कर्म -दंड तथा प्रतिफल- के सिद्धांतों पर विश्वास के कारण पैदा हुई है। शूद्र अछूत होने का हक़दार

इसलिए है कि वह पहले के जन्मों में निश्चित रूप से पापी था और इसी लिए इस वर्ग में पैदा हुआ है।

यह विकृत अवधारणा पूरे जीवन को नष्ट कर देती है। इस धारणा के कारण हम मान सकते हैं कि अछूतों की मदद करना कर्म के सिद्धांत का एक प्रकार का अनादर है।

यह पिछड़ेपन, अत्याचार, वर्गों में विभाजन और अवज्ञा के साथ एक प्रकार का समझौता है।

आवागमन की अवधारणा तथा कर्म के इस सिद्धांत ने समाज को विभिन्न वर्गों में बाँटने का काम किया है। इन दोनों दर्शनों ने ऐसे निर्धन, कमज़ोर और बीमार लोगों के बारे में इस ग़लत धारणा को जन्म दिया है, जिनके हाथों में कुछ नहीं है।

हिंदू धर्म ने इन लोगों की मदद करने और उनकी ओर सहायता का हाथ बढ़ाने का अवसर गँवा दिया है।

यह हिंदू दृष्टिकोण मानव प्रवृत्ति की प्रकृति के विपरीत दृष्टिकोण है। वह प्रकृति जो कमजोरों, जरूरतमंदों और बीमारों की सहानुभूति पर उभारती है और उनकी सेवा करने और

उनके तकलीफ़ और पीड़ा को दूर करने का प्रयास करने के लिए कर्तव्य की भावना को जागृत करती है।

मुझे नहीं पता कि हिंदू वेदों में लिखे अंतिम दिन (प्रलय) में विश्वास से कैसे दूर हो गए, जिस विश्वास से मानव जीवन ठीक हो जाता है और दुनिया के बारे में उसका दृष्टिकोण सही हो जाता है? इस विश्वास का सार यह है कि इन्सान को आख़िरत में अल्लाह के सामने खड़े होना है और अपने कर्मों का हिसाब देना है, इन्सान जब पैदा होता है तो उसके ऊपर गुनाह का बोझ नहीं होता है और पीड़ित एवं असहाय लोगों की मदद करने से अल्लाह के यहाँ आख़िरत में इन्सान का दर्जा ऊँचा हो जाता है।

अब यह निर्णय आपको करना है कि दोनों दर्शनों में से कौन-सा दर्शन मानव हित में अधिक है और उसकी प्रव्रत्ति से अधिक निकट है?

कर्म का दर्शन ... या वेदों का दर्शन?

ऋग्वेद में आया है : "हे प्रभु, तू अच्छे व्यक्ति को अच्छा प्रतिफल प्रदान करता है।"[1]

इसी ऋग्वेद में है : "मुझे उस स्थान पर अमर कर दे, जहाँ हर प्रकार के सुख एवं खुशियाँ हैं और जहाँ वह सारी चीजें मिलेंगी, जो मन चाहेगा।"[2]

यह वेद का अक़ीदा है।

वेदों के अनुसार स्वर्ग भी है, जहाँ सदाचारी लोग सुख-सुविधाओं का आनंद लेंगे।

और यातना भी है, जिसका सामना पापियों को करना होगा।

ऋग्वेद कहता है : "ऐसा स्थान जो बहुत गहरा है और पापियों के लिए है।"[3]

---

[1] ऋगवेद, मण्डल 1, सूक्त 1, मंत्र 6।

[2] ऋगवेद, मण्डल 9, सूक्त 113, मंत्र 9-11।

[3] ऋगवेद, मण्डल 4, सूक्त 5, मंत्र 5।

आप ही बताएँ कि आवागमन और आत्मा के एक शरीर के बाद दूसरा शरीर धारण कर लेने की मान्यता के बाद भी इन स्थानों का कोई अस्तित्व संभव है?

पापियों के लिए तैयार बहुत गहरे स्थान का अस्तित्व कर्म के दर्शन के बाद कैसे संभव है?

मालूम यह हुआ कि कर्म का दर्शन समग्र रूप से एक मानव आविष्कार और वेदों की आत्मा के विपरीत अवधारणा है।

सारे नबियों की मान्यता थी;, आख़िरत के दिन तथा जन्नत एवं जहन्नम पर ईमान लाना और इस बात पर विश्वास रखना कि इन्सान पैदा होते समय मासूम होता है, उसके सर पर गुनाहों का बोझ नहीं होता।

यही वह मान्यता है, जो प्रव्रत्ति से सहमत और मेल खाता है तथा अत्याचार, पिछड़ेपन, वर्णव्यवस्था और अवज्ञा\ से लोहा लेता है।

नबियों का धर्म इन्सान को ऊपर उठाने का प्रयास करता है और लोगों को समान बनाने का आह्वान करता है।

इस्लाम की नज़र में मनुष्य का मूल्य न उसके वर्ग में है, न उसके रूप में, न उसके स्वास्थ्य की स्थिति में, न ही उसके भौतिक स्तर में, बल्कि मनुष्य का मूल्य उसके द्वारा किए गए अच्छे कर्मों के अनुपात में है।

इस्लाम हसब-नसब (वंशावली) की उपेक्षा करते हुए सभों का उत्थान चाहता है।

वह छुआछूत और वर्णव्यस्था जैसी अवधारणाओं का बड़ी सख़्ती से खंडन करता है।

उच्च एवं महान अल्लाह ने पवित्र क़ुरआन में कहा है : "ऐ मनुष्यो! हमने तुम्हें पैदा किया एक नर तथा नारी से तथा बना दी हैं तुम्हारी जातियाँ तथा प्रजातियाँ, ताकि एक- दूसरे को पहचानो। वास्तव में, तुममें अल्लाह के समीप सबसे अधिक आदरणीय वही है, जो तुममें अल्लाह से सबसे अधिक डरता हो। वास्तव में अल्लाह सब जानने वाला है,

सबसे सूचित है।" सूरा अल-हुजुरात : 13 जबकि अल्लाह के रसूल -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने फ़रमाया है : "जिसका कर्म उसे पीछे छोड़ दे, उसका नसब (वंश) उसे आगे नहीं ले जा सकता।"[1]

दूसरी हदीस में नबी -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने फ़रमाया है : "ऐसा न हो कि लोग मेरे पास अपने कर्मों के साथ आएँ और तुम अपने नसब (वंश तथा कुल) के साथ आओ।"[2]

इस तरह से देखा जाए, तो इस्लाम में न नसब (वंश) की कोई क़ीमत है और न वज़न।

जबकि अल्लाह के रसूल -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने फ़रमाया है : "लोगो, तुम्हारा रब एक है और तुम्हारा पिता एक है। सुनो, तक़वा (परहेज़गारी) के अलावा किसी और आधार पर किसी अरबी को अजमी (जो अरबी न

---

[1] सहीह मुस्लिम, हदीस संख्या : 2699।

[2] वादई ने इसे अल-सहीह अल-मुसनद, हदीस संख्या : 1426 में हसन कहा है।

हो) पर, अजमी को अरबी पर, लाल को काले अथवा काले को लाल पर कोई प्रधानता नहीं है। क्या मैंने पैगाम पहुँचा दिया?"[1]एक और हदीस में है कि अल्लाह के रसूल - सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने फ़रमाया है : "मुझे कमज़ोर तथा निर्धन लोगों को ढूँढकर ला दो। क्योंकि तुम्हें रोज़ी एवं सहायता तुम्हारे कमज़ोर एवं निर्धन लोगों के कारण प्राप्त होती है।"[2]

आप एक तरफ़ इस वाणी को देखें : "मुझे निर्बल लोगों को ढूँढकर ला दो, क्योंकि तुम लोगों को जो रोज़ी तथा सहायता प्राप्त होती है, वह तुम्हारे निर्बल लोगों के कारण ही होती है" और दूसरी तरफ़ यह देखें कि हिंदू निर्बल लोगों को किस नज़र से देखते हैं?

---

[1] इसे बैहक़ी ने शुअब अल-ईमान में रिवायत किया है और यह हदीस सहीह है। देखिए : सिलसिला सहीहा, हदीस संख्या ; 2700।

[2] सुनन अबू दाऊद तथा सुनन तिर्मिज़ी। अलबानी ने इसे सहीह अल-जामे तथा सहीह अबू दाऊद, हदीस संख्या : 2594 में सहीह कहा है।

मानव हृदय में निर्धनों, निर्बलों और सीधे-साधे तथा मंदबुद्धि वाले लोगों के प्रति दया रखी गई है, अतः वर्तमान हिंदू धर्म का इस प्रवृत्ति के विरुद्ध जाना सही मायने में एक समस्या है।

11- क्या सच में हिंदू गाय को पवित्र मानते हैं?

हिंदू धर्म में लाभ का स्रोत होने के रूप में गाय का एक विशेष सम्मान है। यहाँ एक और मसला है। वह है वर्तमान हिंदू अवधारणा कि माबूद (पूज्य) अपनी सारी सृष्टियों में, जिनमें गायें भी शामिल हैं, वास करता है। इस अवधारणा को अद्वैतवाद कहा जाता है। इस तरह देखा जाए, तो हिंदू धर्म में गाय को विभिन्न प्रकार का सम्मान हासिल है।

भारत के विभिन्न हिस्सों में गायों के लिए विशेष समारोह लगातार आयोजित किए जाते हैं।[1]

इसके विपरीत वेदों ने कहा है कि अल्लाह हर कमियों से पाक और सारी सृष्टियों से बड़ा है।

ऋग्वेद में है : "मैं परमेश्वर, हर वस्तु से पहले से मौजूद (उपस्थित) हूँ, मैं ही सारे संसार का स्वामी हूँ, मैं ही वास्तविक

---

[1] पवित्र गाय की कथा, लेखक : द्विजेंद्र नारायण।

उपकारी हूँ और सारी नेमतों (अनुग्रहों) का स्वामी हूँ। अतः सारे प्राणियों को मदद के लिए मुझ ही को पुकारना चाहिए।"[1]

यह सूर्य की तरह स्पष्ट वर्णन अद्वैतवाद को नकारता है। इसके अनुसार अल्लाह इस संसार का सृष्टिकर्ता है और संसार से पृथक है।

इस बयान में भौतिक संसार को पवित्र मानने या सृष्टियों से मदद माँगने से भी सावधान किया गया है। अतः मदद केवल गायों की रचना करने वाले और सारे संसार की रचना करने वाले से माँगी जाएगी।

केवल एक अल्लाह के सामने समर्पण का विश्वास ही इस्लामी आस्था का मूल तत्व है।

इस्लाम यह बताता है कि गाय समेत हमारे आस-पास की सारी भौतिक वस्तुएँ, हमारी सेवा में लगी हुई हैं और अल्लाह ने उनको अपने अनुग्रह से पैदा किया है। उच्च एवं महान अल्लाह ने क़ुरान में कहा है : "तथा उसने तुम्हारी सेवा

---

[1] ऋगवेद, मण्डल 10, सूक्त 48, मंत्र 1।

में लगा रखा है, जो कुछ आकाशों तथा धरती में है, सबको अपनी ओर से। वास्तव में, इसमें बहुत-सी निशानियाँ हैं, उनके लिए, जो सोच-विचार करें।" सूरा अल-जासिया : 13

यह इस्लाम का अक़ीदा और इन्सान की फ़ितरत है।

हिंदू अगर वेदों के एकेश्वरवाद और अल्लाह के आगे समर्पण की ओर लौटना चाहते हैं, तो उनको इस्लाम को गले लगाना पड़ेगा। इस्लाम ने वेदों में प्रस्तुत सारे सत्य को सामने लाने का काम किया है और उसने मानव जाति की सारी गलतियों को सही किया है, तथा इन्सान के द्वारा अल्लाह की वह्य में किए गए परिवर्तनों को दूर हटाया है।

12- लेकिन हिंदू धर्म में पाकदामनी और पाप से बचने की शिक्षाएँ भी बड़ी संख्या में मौजूद हैं। क्या ये उसे एक विशिष्ट स्थान प्रदान नहीं करतीं?

मैंने पहले हिंदू धर्म में अत्यधिक सख़्ती की बात का उल्लेख किया है, लेकिन मैं यहाँ जो कहना चाहता हूँ, वह यह है कि पाप की चुभन और अन्तरात्मा में पश्चाताप का भाव ईश्वरीय आदेश से जुड़े प्राकृतिक मामले हैं।

चूँकि हम ईश्वरीय आदेश को मानने के पाबंद हैं, इसलिए हम कोई शरीयत विरोधी काम होने पर अंतरात्मा की फटकार को महसूस कर सकते हैं।

यही फ़ितरत (प्रवृत्ति) है। उच्च एवं महान अल्लाह ने पवित्र क़ुरआन में कहा है : "अल्लाह की वह फ़ितरत (प्रवृत्ति), जिसपर उसने लोगों को पैदा किया है।" सूरा अर-रूम: 30

इस फ़िरत (प्रवृत्ति) के सामने भलाई तथा सत्य के विरुद्ध जाते समय इन्सान अंतरात्मा की मलामत (फटकार) को महसूस करता है।

सर्वशक्तिमान एवं महान अल्लाह ने अपने अंतिम संदेश (धर्म) -इस्लाम-में भलाई तथा सच्चाई के मूल्यों का उल्लंघन हो जाने पर क्षमा माँगने और तौबा करने का तरीक़ा बता दिया है, और साथ में कहा है कि हक़ वाले को उसका हक़ लौटा दिया जाए। इससे अल्लाह गुनाह को मिटा देगा।

लेकिन हिंदू धर्म ने पाप का सामना करने के लिए कुछ अलग तरीक़ा बताया है। यह तरीक़ा है अपने ऊपर बहुत ज़्यादा सख़्ती करना और मौन साधनाएँ करना।

13- क्या हिंदू धर्म की मौन साधना एवं समाधि जैसी चीज़ें अच्छी नहीं हैं?

ध्यान कार्य (मौन साधना), जो बाद के युगों में प्राण दर्शन के तहत सामने आने वाले योग सत्रों में होता है, हिंदू धर्म के अनुसार मौन साधना अल्लाह की सृष्टियों तथा उसकी हिकमत पर चिंतन करने और उसकी अद्भुत रचना तथा नाना प्रकार की नेमतों पर ग़ौर करने के लिए नहीं होता।

ध्यान एक प्रकार की पूर्ण स्थिरता एवं मन को हर प्रकार के ख़्यालों से खाली करने का नाम है।

यह मृत्यु की भाँति पूर्ण स्थितरता है। इसमें मन को कुछ भी सोचने से पूर्ण रूप से रोक दिया जाता है।

वेदों के बाद के ज़माने में आरंभ होने वाले अजीब व गरीब मौन तथा ध्यान सत्रों ने उनकी सोचने की क्षमता को प्रभावित किया और उनके मन में उलटे-सीधे विचार आने लगे तथा शैतान उनकी अक़्लों (बुद्धि) के साथ खेलने लगा।

उनमें से कुछ लोग समझते हैं कि उन्होंने ज्ञान प्राप्त कर लिया है। हालाँकि उनके मन में ये उलटे-सीधे विचार भूखे-प्यासे तथा पूरे तौर पर स्थिर रहने के नतीजे में मस्तिष्क के आयनों के असंतुलन के कारण आ रहे हैं, जैसे मैं इससे पहले स्पष्ट कर आया हूँ।[1]

पूर्ण स्थिरता के साथ लंबे समय तक ध्यान में और भूखे-प्यासे रहने के कारण इस प्रकार के विचार उलटे-सीधे विचार मन में आते हैं। दुनिया में स्थिर ध्यान विद्यालयों के सबसे प्रसिद्ध संस्थापकों में से एक Mikau Usuni ने इस बात को स्वीकार किया है।

उन्होंने बताया है कि वह लंबे समय तक भूखे तथा वंचित रहने के बाद सोचने-समझने की क्षमता खोने और

[1] https://www.ncbi.nlm.nih.gov/pubmed/8931651

मतिभ्रमित होने लगी। इसके बाद उनके दिल में तरह-तरह के विचार आने लगे।[1]

मनोचिकित्सक डोनोवन रॉक्लिफ ने स्वतंत्र शोध में इस बात की पुष्टि की है कि इन साधनाओं के नतीजे में आने वाले निचार और मतिभ्रम की बीमारी के कारण आने वाले विचारों में कोई अंतर नहीं है।

दूसरी बात यह है कि योग के अधिकतर आसन स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होते हैं। लंबे समय तक इनपर अमल करने से उलझन, चिंता और स्थान तथा समय की सुध-बुध न हो पाना जेसी चीज़ें पैदा हो जाती हैं। इससे स्मरणशक्ति कम होती है और अलजाइमर रोग जल्दी आता है।[2]

---

[1] Reiki for Beginners, David F Vennells. Page 30-35. डॉ. हैफ़ा बिंत नासिर अल-रशीद की किताब " التطبيقات المعاصرة لفلسفة الاستشفاء الشرقية" से उद्धरित।

[2] An introduction to complementary medicine, Simon Borg Olivier, p.290. (डॉक्टर हैफ़ा बिंत नासिर अल-रशीद की किताब हरकह अल-अस्र अल-जदीद से उद्धरित।)

इन साधनाओं के कारण हिंदू धर्म वेदों तथा नबियों की शिक्षाओं से दूर हो गया।

इस्लाम ने अल्लाह की सृष्टियों के बारे में चिंतन-मंथन का आह्वान किया है। एवं चिंतन एक ऐसा कार्य है जो (चिंतन करने वाले को) जीवन में संघर्ष, अल्लाह का शुक्र एवं उसके आज्ञापालन के साथ काम काज करने की ओर ले जाता है। और मस्तिष्क को सोच-विचार से रोक देने से शांति की प्रप्ति नहीं होती है।

अतः सही चिंतन वही है, जिससे अल्लाह के आज्ञापालन का जज़्बा और उसकी निकटता प्राप्त होती है। "जो खड़े, बैठे तथा सोए (प्रत्येक स्थिति में,) अल्लाह को याद करते तथ आकाशों और धरती की रचना में विचार करते रहते हैं। (कहते हैं :) हे हमारे रब! तू ने यह सब व्यर्थ नहीं रचा है। हमें अग्नि के दंड से बचा ले।" सूरा आल-ए-इमरान : 191

यही वह चिंतन है, जो इस्लाम लाया है और यही चिंतन मानव प्रवृत्ति की प्रकृति के अनुरूप है और इससे इन्सान को अपने चारों ओर फैली अल्लाह की नेमतों

(अनुग्रहों) के बारे में सोचने और अल्लाह का शुक्र अदा करने का मौक़ा मिलता है।

जहाँ तक हिंदू धर्म के मौन साधना तथा ध्यान सत्रों की बात है, तो ये शैतान के स्थल हैं, जहाँ शैतान मौन साधना तथा ध्यान आसनों में लगे हुए लोगों की मदद करते हुए उनको कुछ स्वप्न और रहस्योद्घाटन दे जाता है। इन अवस्थाओं में उनके पास जन्म चक्र, आवागमन, अद्वैतवाद और मूर्तियों में ईश्वर के मौजूद होने जैसे ख़यालात आते हैं और ऋषि मुनि इन ख़यालात को अपने मानने वालों को बताते हैं, इस तरह खुद भी गुमराह होते हैं और दूसरों को भी पथभ्रष्ट करते हैं।

14- घर-परिवार को त्याग कर पहाड़ों एवं जंगलों में रहने में क्या बुराई है?

हिंदू धर्म कामवासना से इस्लाम की तरह उसे परिष्कृत रूप देने के लिए नहीं लड़ता, बल्कि तपस्या और साधना का रास्ता चुनता है। इसलिए हम कह सकते हैं कि वर्तमान हिंदू धर्म इन्सान को संसार त्याग की ओर ले जाता है।

क्योंकि हिंदू धर्म का मानना है कि कामवासना को दबाने के लिए शरीर को भूलना पड़ेगा।

इसलिए मोक्ष प्राप्त करने वाला हिंदू पहाड़ों एवं जंगलों में चला जाता है, ताकि उसका शरीर सड़ जाए और वह एक भिखारी के रूप में शेष उम्र बिता दे।

यह एक विनाशकारी क़दम है, जो इन्सान, परिवार और समाज को नष्ट कर देता है।

दरअसल कामवासना ईश्वर का एक वर्दान है, जो इसलिए दिया गया है कि परिवार बने, समाज का गठन हो और जीवन की गाड़ी आगे बढ़े।

उसे परिष्कृत रूप देने और उसका सही स्थान में इस्तेमाल करने की ज़रूरत है, तपस्या और साधना के मार्ग पर चलने की नहीं।

यह किसने कहा है कि हमारे अस्तित्व का उद्देश्य यह है कि हम थोड़ा-सा भोजन माँगकर प्राप्त कर लें और फिर दिन भर जंगलों एवं पहाड़ों में घूमते रहें, यहाँ तक मौत आ जाए?

यह किसने कहा है कि हम दुनिया में इसलिए आए हैं कि एक भगवा कपड़ा पहनकर संसार से कटकर जीवन बिताएँ, यहाँ तक मौत आ जाए?

छोटे-छोटे कीड़े-मकोड़े भी जीवन के उद्देश्य, धरती को आबाद करने और जीवन का सही उपयोग करने की बात हमसे अधिक जानते हैं। आप मुधमक्खियों को देख लें, अपने तथा अपने बच्चों की भलाई के लिए व्यवस्थित रूप में प्रयासरस रहते हैं। आप छोटे-छोटे बैक्टेरियाओं को देखेंगे कि आँतों में व्यवस्थित रूप से काम करते हैं और फ़ायदा पहुँचाते और फ़ायदा प्राप्त करते हैं।

जीवन समग्र रूप से नियम के तहत काम करता है।

वर्तमान हिंदू धर्म निष्क्रियता और भीख माँगने की ओर बुलाता है। फलस्वरूप हिंदू धर्म में भीख माँगना एक जीवन पद्धति बन गया है।

यहाँ यह सवाल पैदा होता है कि एक हिंदू का लोगों से अलग होकर पहाड़ों की चोटियों और आबादी से दूर जाकर रहने का अर्थ क्या है? इससे लोगों का फ़ायदा क्या है?

सच्चा धर्म और जीने का सही तरीका है मेहनत, शुभचिंतन, लोगों से मेल-जोल रखना, उनकी त्रुटियों को दूर करना और उनके द्वारा दिए गए कष्ट पर सब्र करना। उनसे पीछा छुड़ाकर वादियों और जंगलों में भाग जाना नहीं।

अल्लाह के रसूल -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने फ़रमाया है : "जो मुसलमान लोगों से मेल-जोल रखता है और उनके द्वारा दिए गए कष्ट पर सब्र करता है, वह उस मुसलमान

से अच्छा है, जो लोगों से मेल-जोल नहीं रखता और उनके द्वारा दिए गए कष्ट पर सब्र नहीं करता।"[1]

[1] सहीह सुनन तिर्मिज़ी, हदीस संख्या : 2507।

15- वासना का मुक़ाबला करने और पापों से छुटकारा पाने का सबसे अच्छा तरीक़ा क्या है?

इन्सान के अंदर शहवत और कामवासना का होना एक प्राकृतिक बात है और एक मुसलमान अल्लाह के आदेश के अनुसार उसे सही स्थान में रखता है।

उसने शादी का आदेश दिया है, नज़र नीची रखने को कहा है, छुपे तथा खुले में अल्लाह का भय रखने की ताकीद की है और पाप में संलिप्त होने के दंड से अवगत भी किया है।

इसके बावजूद यदि ग़लती हो जाए, तो तौबा का रास्ता भी दिखाया है।

लेकिन हम देखते हैं कि हिंदू धर्म में जब कोई व्यक्ति मोक्ष प्राप्त करना चाहता है, तो अपनी पत्नी, बच्चों और काम-धाम छोड़कर निकल खड़ा होता है, जहाँ जगह मिलती है सो जाता है, भीख माँगकर खा लेता है और मरने तक तपस्या के इसी मार्ग पर चलता रहता है। क्या यह आत्म-अनुशासन का सही तरीक़ा है?

हिंदू साधु, जिनकी संख्या आज भारत में 5 मिलियन से अधिक है, न केवल अपने आश्रितों के भरण-पोषण से दूर भागते हैं, बल्कि खुद दूसरों के मोहताज बन जाते हैं।

इस्लाम ने मानव आत्मा को सबसे अच्छे और बुद्धिमानी तरीक़े से परिष्कृत किया है।

उसने अपने आश्रितों का हक़ अदा करने में कोताही को हराम क़रार दिया है। अल्लाह के रसूल -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने फ़रमाया है : "आदमी के पापी होने के लिए इतना काफ़ी है कि वह अपने आश्रितों का हक़ नष्ट कर दे।"[1]

इस्लाम ने यह भी बताया है कि आत्म-सुधार और आत्म अनुशासन का काम सत्कर्मों के द्वारा और संसार का त्याग किए बिना कामवासना को उसके सही स्थान में रखकर किया जाना चाहिए। इस्लाम की नज़र में इन्सान अपने समाज में रहकर और अपने समाज का निर्माण करते हुए अल्लाह के

[1] सहीह सुनन अबू दाऊद, हदीस संख्या : 1692। यह हदीस सहीह है।

यहाँ मुक्ति प्राप्त कर सकता है। इसके लिए हिंदू धर्म की तरह तपस्या और साधना की ज़रूरत नहीं है।

उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है : "परन्तु, जो अपने रब की महानता से डरा तथा अपने आपको मनमानी करने से रोका। (40) तो जन्नत उसका ठिकाना है। (41)" सूरा अन-नाज़िआत।

अल्लाह का भय और सत्कर्म ही जन्नत का मार्ग है, चाहे आप शानदार महल ही में क्यों न रहते हों।

आत्मा को अनुशासित करने के लिए शरीर को जलाने की आवश्यकता नहीं है। उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है : "तो वह घाटी में घुसा ही नहीं। (11) और तुम क्या जानो कि घाटी क्या है? (12) किसी दास को मुक्त करना। (13) अथवा भूक के दिन (अकाल) में खाना खिलाना। (14) किसी अनाथ संबंधी को। (15) अथवा मिट्टी में पड़े निर्धन को। (16) फिर वह उन लोगों में होता है जो ईमान लाए और जिन्होंने धैर्य (सहनशीलता) एवं उपकार के उपदेश दिए। (17) यही लोग दायें हाथ वाले (सौभाग्यशाली) हैं। (18) सूरा अल-बलद।

इस आयत के अनुसार जन्नत प्राप्त करने के लिए गुलामों को आज़ाद करना पड़ेगा, निर्धनों को खाना खिलाना होगा, अच्छे कार्य करने होंगे और लोगों को अच्छे काम का आदेश देना होगा।

यही मुक्ति का मार्ग है।

इसके लिए समाज से कटकर सारी उम्र भीख माँगते फिरने की ज़रूरत नहीं है।

16- इस्लाम हिंदू धर्म को क्यों खारिज करता है?

आज हिंदू धर्म न तो कोई धर्म है, न मज़हब और न विश्वास पर आधारित दृष्टिकोण, यह वेदों, दर्शनों, साधु-संतों की शिक्षाओं, तंत्रों और अनगिनत अनुष्ठानों का सम्मिश्रण बन चुका है।

यही कारण है कि हंदू धर्म के पास कोई एक ईश्वरीय उपासना व्यवस्था, परिभाषित विशेषताओं के साथ अनुष्ठान प्रणाली, एक निश्चित धार्मिक पाठ्यक्रम या एक केंद्रीय धार्मिक संरचना नहीं है, जो हिंदुओं को एक साथ लाती हो। आज आपको इस प्रकार की कोई वस्तु नहीं मिलेगी। आप सचमुच हजारों पूरी तरह से धार्मिक रूप से स्वतंत्र धार्मिक समूहों के सामने हैं![1]

अल्लाह की इबादत इतनी भ्रमित करने वाली चीज़ के द्वारा कैसे की जा सकती है, जिसका कोई प्रमाण भी न हो?

---

[1] Hindus: their religious beliefs and practices, Julius J. Lipner, Page 8.

धारणाओं के इस उलझे हुए मिश्रण को कैसे जीवन का उद्देश्य बनाया जा सकता है?

फिर देखें कि वर्तमान हिंदुओं ने मूर्तियों को ईश्वर का आकार मान रखा है!

जबकि मूर्तियों को अल्लाह का आकार मानने और उनके माध्यम से ईश्वर की निकटता प्राप्त करने की आशा रखने वालों को उच्च एवं महान अल्लाह ने अविश्वासी घोषित कर रखा है। उसने कहा है : "सुन लो! शुद्ध धर्म अल्लाह ही के लिए (योग्य) है, तथा जिन लोगों ने अल्लाह के सिवा संरक्षक बना रखा है, वे कहते हैं कि हम तो उनकी वंदना इसलिए करते हैं कि वह हमें अल्लाह से समीप कर देंगे। वास्तव में, अल्लाह ही निर्णय करेगा उनके बीच जिसमें वे विभेद कर रहे हैं। वास्तव में, अल्लाह उसे सुपथ नहीं दर्शाता जो बड़ा मिथ्यावादी, कृतघ्न हो।" सूरा अल-ज़ुमर : 3 हिंदुओं ने मूर्ति पूजा द्वारा वेदों का उल्लंघन किया है और अपनी प्रवृत्ति के विरुद्ध गए हैं। उनको पता है कि मूर्तियों को ईश्वर का आकार मानने का उनके पास कोई प्राकृतिक प्रमाण नहीं है। "या वो है,

जो आरंभ करता है उत्पत्ति का, फिर उसे दोहराएगा तथा कौन तुम्हें जीविका देता है आकाश तथा धरती से, क्या कोई पूज्य है अल्लाह के साथ? आप कह दें कि अपना प्रमाण लाओ, यदि तुम सच्चे हो।" सूरा अन-नम्ल: 64

भला उनके पास कोई दलील कहाँ है?

भला उनके पास कोई प्रमाण कहाँ है?

वर्तमान हिंदू धर्म की समस्या यह है कि वह मूर्ति पूजा को बड़ा महत्व देता है और उसे धर्म का एक अभिन्न अंग मानता है।

अतः आपको हर जगह मूर्तियाँ मिल जाएँगी।

मूर्तियों को सामने रखकर ईश्वर की भक्ति नज़र आएगी।

हिंदू धर्म में मूर्तियों, छवियों और प्रतीकों के हजारों अलग-अलग रूप हैं।

इस तरह आज हिंदू धर्म मूर्तियों, मानव निर्मित आकृतियों और प्रतीकों का धर्म बन चुका है।

आज हिंदू धर्म अद्वैतवाद को मानता है।

संसार को शाश्वत मानता है।

वर्णव्यवस्था की स्थापना करता है।

मानव को भगवान का अवतार मानता है।

ईश्वर के मूर्तियों के आकार में होने की बात करता है।

आवागमन पर विश्वास रखता है।

जन्म चक्र पर विश्वास रखता है।

पंच तत्वों को मानता है।

इन सारी बातों की वजह से इस्लाम हिंदू धर्म को खारिज करता है। इस्लाम हिंदू धर्म को खारिज इसलिए करता है कि उसने नबियों की शिक्षाओं का उल्लंघन किया है और एकेश्वरवाद को भुला दिया है।

इस्लाम प्रत्येक हिंदू को उसे गले लगाकर अल्लाह की ओर लौटने का आह्वान करता है। क्योंकि इस्लाम के बिना अल्लाह के यहाँ मुक्ति संभव नहीं है।

उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है : "निःसंदेह अल्लाह के निकट धर्म केवल इस्लाम है।" सूरा आल-ए-इमरान : 19 एक अन्य स्थान में अल्लाह तआला ने कहा है : "और जो भी इस्लाम के सिवा (किसी और धर्म) को अपनाएगा, उसे उसकी तरफ़ से कदापि स्वीकार नहीं किया जाएगा और वह प्रलोक में घाटा उठाने वालों में से होगा।" सूरा आल-ए-इमरान : 85 एक अन्य स्थान में अल्लाह तआला ने कहा है : "मैंने आज तुम्हारे लिए तुम्हारे धर्म को संपूर्ण कर दिया तथा तुमपर अपना पुरस्कार पूरा कर दिया है और तुम्हारे लिए इस्लाम को धर्म स्वरूप चुन लिया है।" सूरा अल-माइदा : 3

अतः किसी भी इन्सान हिन्दू हो या कोई और की मुक्ति के लिए इस्लाम की आवश्यकता है।

इस्लाम धरती में मौजूद अन्य धर्मों की तरह धर्म नहीं है।परन्तु इस्लाम वह एकेश्वरवादी धर्म है, जिसके साथ अल्लाह ने तमाम नबियों को भेजा था। सारे नबी लोगों को एकेश्वरवाद की ओर बुलाने के लिए आए थे। लेकिन आज की बात की

जाए, तो विशुद्ध रूप से एकेश्वरवाद पर इस्लाम के अतिरिक्त कोई भी धर्म क़ायम नहीं है। उसके अतिरिक्त सारे धर्मों में अनेकेश्वरवाद की मिलावट पाई जाती है। मिलावट कम हो या अधिक।

इस्लाम नाम है अल्लाह के अतिरिक्त सारी चीज़ों को छोड़ केवल उसी की इबादत करने का, उसके आदेशों के अनुपालन, उसकी मना की हुई चीज़ों से दूर रहने और उसकी सीमाओं पर रुकने का, भूतकाल तथा भविष्य काल से संबंधित उसकी बताई हुई सारी बातों पर विश्वास करने का और सारी मूर्तियों, आकारों और प्रतीकों से दामन छुड़ाने का।

महान अल्लाह ने कहा है : "पवित्र है आपका रब, गौरव का स्वामी, उस बात से, जो वे बना रहे हैं।" सूरा अस-साफ़्फ़ात : 180

अल्लाह हिंदुओं के इस दावे से पाक है कि उसे मूर्तियों द्वारा आकार दिया जा सकता है।

"तथा सलाम है रसूलों पर।" सूरा अस-साफ़्फ़ात : 181

शांति की जलधारा बरसे अल्लाह के रसूलों पर, जिन्होंने लोगों को उनके रब से अवगत कराया है और उसे हर कमी से पवित्र ठहराया है।

हर हिंदू को क्यों इस्लाम ग्रहण करना चाहिए?

जहाँ एक ओर इस्लाम ही वह धर्म है, जिसे अल्लाह ने अपने बंदों के लिए पसंद किया है और इस्लामी शरीयत (धर्म शास्त्र) ही वह ईश्वरीय शरीयत है, जिसके अतिरिक्त कोई शरीयत अल्लाह के यहाँ ग्रहण योग्य नहीं है, वहीं दूसरी ओर हिंदू धर्म ग्रंथों में, जिनके अंदर हो सकता है कि सच्ची आकाशीय शिक्षाओं के अवशेष मौजूद हों, इस्लाम तथा इस्लाम के नबी मुहम्मद -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- के आने की बहुत-सी शुभ सूचनाएँ मौजूद हैं। यह एक कारण है, जिसे देखते हुए एक हिंदू को इस्लाम धर्म ग्रहण करना चाहिए और इस बात में उसे कोई संकोच नहीं होना चाहिए कि यही एक रास्ता है क़यामत के दिन अल्लाह के सामने मुक्ति प्राप्त करने का।

मैं कुछ हिंदू धर्म ग्रंथों में मौजूद इस्लाम के बारे में शुभ सूचनाओं को बयान करना चाहता हूँ।

लेकिन उनको बयान करने से पहले मैं यह बयान कर देना चाहता हूँ कि हिंदू विधानों की क्या हालत है और हिंदू पवित्र होने के लिए कैसी-कैसी तपस्याएँ करते हैं

और कैसी-कैसी अप्राकृतिक साधनाओं का सहारा लेते हैं?

उनका हाल इस मामले में अह्ले किताब से कुछ ज़्यादा अलग नहीं है। अह्ले किताब और खास तौर से यहूदियों पर भी पवित्रता प्राप्त करने, खाने-पीने की चीज़ों और शरई मामलों में खास पाबंदियाँ थीं, जो उनके अत्याचार, सरकशी और बिगाड़ के कारण उनपर लगाई गई थीं।

उच्च एवं महान अल्लाह ने पवित्र क़ुरआन में कहा है : "यहूदियों के (इसी) अत्याचार के कारण हमने उनपर स्वच्छ खाद्य पदार्थों को ह़राम (वर्जित) कर दिया, जो उनके लिए ह़लाल (वैध) थे तथा उनके बहुधा अल्लाह की राह से रोकने के कारण।" सूरा अन-निसा : 160

आप ज़रा तौरात की Book of Leviticus में एक यहूदी स्त्री को मासिक धर्म के दिनों में जो निर्देश दिए गए हैं, वह पढ़ लें, बहुत सारी बातें समझ में आ जाएँगी। तौरात कहता है :

"स्त्री मासिक धर्म के दौरान जिस चीज़ पर लेटेगी वह नापाक हो जाएगी। जिस चीज़ पर बैठेगी वह नापाक हो जाएगी। जो भी उसके बिस्तर को छुएगा, उसे अपने कपड़े धोने पड़ेंगे एवं पानी में नहाना पड़ेगा और वह शाम तक अपवित्र रहेगा। जो किसी ऐसे वस्तु को छुएगा, जिसपर वह बैठी थी, उसे अपने कपड़े धोने पड़ेंगे एवं पानी में नहाना पड़ेगा और वह शाम तक नापाक रहेगा। यदि बिस्तर पर या फर्नीचर आदि पर कुछ है, जिसपर वह बैठती है, जब वह उसे छूएगा, तो वह शाम तक नापाक रहेगा। यदि कोई पुरुष उसके साथ संभोग करे, तो उसकी नापाकी उसे लग जाएगी और वह सात दिनों तक नापाक रहेगा और वह व्यक्ति जिस बिस्तर पर भी लेटेगा, वह नापाक हो जाएगा।"[1]

[1] Book of Leviticus, 15 : 20-24.

इस प्रकार के आदेश इसलिए दिए गए थे कि बनी इसराईल के दिल कठोर एवं सख़्त हो चुके थे।

इन हालात में अल्लाह ने उनको तौरात में बताया था कि वह एक रसूल भेजेगा, जो उनपर लगी हुई इन पाबंदियों को हटा देगा।

तौरात हमें बताती है कि जब अल्लाह के नबी याक़ूब अलैहिस्सलाम की मृत्यु का समय आया, तो उन्होंने अपने बारह बेटों को जमा किया और वसीयत की, जो बड़ी मश्हूर है। तौरात के अनुसार उन्होंने इस दौरान कहा :

"याक़ूब ने अपने बेटों को बुलाया और कहा : "तुम लोग एकत्र हो जाओ, ताकि मैं तुमको बता सकूँ कि अंतिम दिनों में तुम्हारे साथ क्या-क्या होगा। ऐ याक़ूब के बेटो, एकत्र हो जाओ और अपने पिता इसराईल की बातों को ध्यान से सुनो।

...

फिर यहूदा से कहा। यहूदा नबियों; दाऊद, सुलैमान और मसीह अलैहिमुस्सलाम के दादा थे।

उनसे कहा :

"छड़ी यहूदा से उस समय तक दूर नहीं होगी और राज्य शक्ति उस समय तक उसकी संतान के पास रहेगी, जब तक वह शासक न आ जाए, जिसके अधीन जातियाँ रहेंगी।"[1]

अह्ले किताब के बीच इस बात में कोई मतभेद नहीं है कि यह स्पष्ट बयान एक बड़े सुसमाचार की हैसियत रखता है।

इसमें एक ऐसे व्यक्ति के आने का सुसमाचार सुनाया गया है, जो आने वाले समय में आएगा और नबूवत, शासन और विधान रचना का काम उसके हवाले हो जाएगा।

यहाँ प्रयुक्त शब्द "छड़ी" से मुराद शासन की छड़ी है। यानी यहूदा की नस्ल में नबी और शासक पैदा होते रहेंगे।

[1] Book of Leviticus उत्पत्ति : 49 : 1-2 तथा 10।

यहाँ तक कि वह शासक आ जाएगा, जिसके सामने जातियाँ झुक जाएँगी।

अब सोचने की बात यह है कि वह शासक कौन है, जिसका सुसमाचार याक़ूब ने दिया था और जिसके अधीन जातियाँ हो जाएँगी?

इस सवाल का जवाब देने से पहले हमें यह जान लेना चाहिए कि बनी इसराईल के अंतिम नबी ईसा अलैहिस्सलाम हैं, जो यहूदा की नस्ल से थे।

फिर बनी इसराईल में नबी आने का सिलसिला अचानक रुक गया।

याक़ूब अलैहिस्सलाम की भविष्यवाणी के अनुसार यह माना जा सकता है कि बनी इसराईल में नबी आने का सिलसिला बंद होने के बाद यहूदा की नस्ल से बाहर के एक व्यक्ति के लिए राज्य, नबूवत और विधान रचना का काम हस्तांतरित हो गया। क्या ऐसा नहीं है?

यह बिलकुल स्पष्ट बात है कि यह व्यक्ति ईसा अलैहिस्सलाम नहीं हो सकते। क्योंकि ईसा अलैहिस्सलाम यहूदा की नस्ल से थे।

इस भविष्यवाणी में दूसरी बात यह है कि इस व्यक्ति के संप्रदाय के लोग खुद यहूदा की धरती पर क़ब्ज़ा कर लेंगे। "शासन की छड़ी यहूदा से उस समय तक दूर नहीं होगी और राज्य शक्ति उस समय तक उसकी संतान के पास रहेगी, जब तक वह शासक न आ जाए, जिसके अधीन जातियाँ रहेंगी।" उस नबी की उम्मत के लोग धरती पर क़ब्ज़ा कर लेंगे। फ़िलिस्तीन पर क़ब्ज़ा कर लेंगे। बड़े-बड़े साम्राज्य उनके आगे झुक जाएँगे।

चुनांचे हम देखते हैं कि उमर बिन ख़त्ताब रज़िल्लाहु अनहु ने अपने खिलाफ़त काल में यहूदा की भूमि पर क़ब्ज़ा कर लिया और शाम, इराक़ तथा ईरान का पूरा क्षेत्र इस्लाम के आगे झुक गया।

यह एक ऐसा तथ्य है, जिसके बारे में अधिक चिंतन की ज़रूरत नहीं है।

इस तरह इतिहास हमें बताता है कि याक़ूब अलैहिस्सलाम द्वारा अपने बेटों को की गई वसीयत में जो भविष्यवाणी थी, वह सामने आ चुकी है और वह भविष्यवाणी अंतिम नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अतिरिक्त किसी नबी पर फिट नहीं बैठती और उसके विवरण आपकी उम्मत के अतिरिक्त किसी उम्मत पर लागू नहीं होते।

लेकिन यहाँ तौरात में आए हुए शब्द "शीलोन" (शासक) का शाब्दिक अर्थ क्या है?

"शीलोन" का शाब्दिक अर्थ है, राहत देने वाला और पाबंदियाँ हटाने वाला। यही अर्थ पुराने नियम (Old testament) में विशेषिकृत कई बाइबिल संस्थाओं ने बयान किया है।[1]

---

[1] https://www.christiancourier.com/articles/1101-who-is-the-mysterious-shiloh Rest-giver or peace-bringer. http://www.abideinchrist.com/messages/gen49v8.html Shiloh is the man of rest, the giver of rest or rest-bringer.

इस तरह याक़ूब अलैहिस्सलाम ने उनको उस व्यक्ति के आने का सुसमाचार सुनाया था, जो उनके बोझ उतार देंगे और उनके बंधनों को खोल देंगे, जिनमें वे जकड़े हुए थे।

अब आइए, हम यह आयत पढ़ते हैं : "जो लोग ऐसे अनपढ़ रसूल एवं नबी की आज्ञा का पालन करते हैं जिनको वह लोग अपने पास तौरात व इंजील में लिखा हुआ पाते हैं वह उनको नेक बातों का आदेश देते हैं और बुरी बातों से रोकते हैं और पाकीज़ा (पवित्र) चीज़ों को हलाल बताते हैं और गंदी चीज़ों को उन पर हराम घोषित करते हैं।" सूरा अल-आराफ़ : 157

यहाँ स्पष्ट रूप से कहा गया है कि आप उनको बोझ उतार देंगे और उन बंधनों को खोल देंगे, जिनमें वे जकड़े हुए थे। क्योंकि इस्लामी शरीयत एक उदार एवं आसान शरीयत है, जिसने उन सारे बंधनों तो तोड़ दिया, जिनमें वे जकड़े हुए थे।

अब आइए, हम हिंदू धर्म की पवित्र ग्रंथों की ओर चलते हैं।[1]

हिंदू धर्म वह दूसरा धर्म है, जो पापों से पवित्र होने के लिए कठिन तपस्याओं एवं साधनाओं की शिक्षा देता है।

अतः हिंधू धर्म ग्रंथों में एक ऐसे नबी का सुसमाचार सुनाया गया है, जो उनका बोझ उतारेंगे और उनको गुनाहों से पाक करेंगे।

हिंदू ग्रंथ कहते हैं : "कल्कि माधव मास की 12 तारीख़ को जन्म लेंगे।"[2]

कल्कि का अर्थ है, गुनाहों से पाक करने वाला।

कल्कि पुराण में उल्लिखित माधव महीना से वसंत का महीना है, जो मन को भाता है।

---

[1] हमने हिंदू धर्म ग्रंथों में मौजूद सुसमाचारों से पहले याक़ूब के द्वारा अपने बेटों को की गई वसीयत में मौजूद सुसमाचार को इसलिए बयान किया है, क्योंकि यह इस्लाम के बाहर से उसके सच्चा धर्म होने का एक स्वतंत्र प्रमाण है।

[2] कल्कि पुराण, अध्याय : 2, श्लोक : 15।

इस तरह वह नबी, जो उनको उनके गुनाहों से पवित्र करेगा, रबी महीने की 12 तारीख़ को पैदा होगा।

जबकि हमारे नबी मुहम्मद -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- जमहूर (अधिकतर) मुस्लिम विद्वानों के अनुसार रबी अल-अव्वल महीने की 12 तारीख को पैदा हुए थे।[1]

जहाँ तक आपके जन्म स्थल की बात है, तो उसके बारे में हिंदू पवित्र ग्रंथों में है : "कल्कि शम्भल ग्राम में विष्णुयश के यहाँ जन्म लेंगे।"

शंभल ग्राम का अर्त शांति वाला नगर है।

और शांति वाला नगर मक्का है। "और (याद करो) जब इब्राहीम ने अपने रब से प्रार्थना की कि हे मेरे रब! इस क्षेत्र को शांति का नगर बना दे।" सूरा अल-बक़रा : 126

[1] सहीह अस-सीरह अन-नबविय्यह, मुहम्मद बिन नासिर अल-अलबानी, पृष्ठ 13, डॉक्टर इबराहीम अब्दुल ग़फ़ूर की किताब दावह अल-हिंदूस इला अल-इस्लाम पृष्ठ 198 से उद्धरित।

अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मक्का में पैदा हुए थे।

जहाँ तक विष्णुयास नाम की बात है, तो उसका अर्थ है, अब्दुल्लाह यानी अल्लाह का बंदा।

रही बात इस आने वाले नबी की माँ की, तो उसका नाम होगा सुमति। "कल्कि विष्णुयास के घर में उनकी पत्नी सुमति के पेट से जन्म लेंगे।"[1]

सुमति का अर्थ है, आमिना।

जबकि हम सब जानते हैं कि अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की माँ का नाम आमिना है।

हिंदू धर्म के अनुसार कल्कि शम्भल ग्राम से निकलेंगे, शैतान से युद्ध करेंगे, अंधकार, बिगाड़ और सरकशी का अंत करेंगे और अंततः दोबारा शम्भल ग्राम लौट जाएँगे, जिसके बाद अल्लाह उनको आकाश की ओर उठा लेगा।

---

[1] कल्कि पुराण, अध्याय : 2, श्लोक : 11।

हर मुसलमान इस तथ्य से अवगत है। अल्लाह के नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मक्का छोड़कर मदीना गए, लोगों के बीच एकेश्वरवाद का प्रचार-प्रसार किया और फिर मृत्यु से कुछ समय पहले विजयी बनकर मक्का आए।

हिंदू धर्म ने इस आने वाले नबी के कुछ और भी गुण बयान किए हैं, जिनसे हम सहमत नहीं हैं। कालकी उनके यहाँ ईश्वर का अवतार होगा, लेकिन हम पीछे वेदों के आलोक में इस अवधारणा का खंडन कर आए हैं।

अल्लाह अपनी सृष्टियों का रूप धारण नहीं करता और आकाश तथा धरती उसे अपने अंदर समा नहीं सकते।

लेकिन उनके धर्म ग्रंथों में इस आने वाले नबी की एक विशेषता ने मेरा ध्यान खींचा कि वह एक सफ़ेद घोड़े पर सवार होगा। खुद अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास एक सफ़ेद घोड़ा था, जिसका नाम अल-मुर्तजज़ था।[1]

---

[1] इसे हाकिम ने मुस्तदरक में रिवायत किया है और इसकी सनद को सहीह कहा है।

हिंदू आने वाले नबी कल्कि की जो मूर्ति बनाते हैं, उसमें वह एक सफ़ेद घोड़े पर सवार होते हैं और गर्दन पर तलवार उठाए होते हैं। मैंने कल्कि की जितनी मूर्तियाँ देखी हैं, सब इसी प्रकार की हैं।

इससे मालूम होता है कि वह एक मुजाहिद नबी होंगे। यह हमारे नबी मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का एक गुण है। आपने तलवार से जिहाद किया और अल्लाह के दुश्मनों से युद्ध किया।

आने वाले नबी कल्कि की अन्य विशेषताएँ उनके धर्म ग्रंथों में यह आई हैं कि वह ग़ैब (परोक्ष) की बात बताएँगे, अपने समुदाय के प्रतिष्ठित व्यक्ति होंगे, बात कम करेंगे, दानशील होंगे, शारीरिक रूप से मज़बूत होंगे और उपकार का अच्छा बदला देंगे।

लेकिन उनकी एक खास विशेषता यह बयान हुई है कि "कल्कि अपने चार साथियों की सहायता से शैतान को हलाक कर देंगे।"[1]

इस श्लोक को पढ़ते ही एक मुसलमान के ज़ेहन में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चार साथी अबू बक्र सिद्दीक़, उमर बिन ख़त्ताब, उसमान बिन अफ़्फ़ान और अली बिन अबू तालिब के नाम आ जाएँगे।

ये अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सबसे निकटतम साथी थे। इन लोगों ने शुरू से आपका साथ दिया और आपके बाद आपके ख़लीफ़ा बने।

चारों बड़े ही प्रतिष्ठित सहाबा थे। हमेशा आपके साथ रहे और आह्वान कार्य में आपका भरपूर साथ दिया।

आपकी मृत्यु के बाद क्रमवार मुसलमानों के ख़लीफ़ भी बने :

1- अबू बक्र सिद्दीक़।

---

[1] कल्कि पुराण, अध्याय : 2, श्लोक : 5।

2- उमर बिन ख़त्ताब।

3- उसमान बिन अफ़्फ़ान।

4- अली बिन अबू तालिब।

इस सिलसिले की अंतिम कड़ी अली बिन अबू तालिब के क़त्ल होने के साथ ख़िलाफ़त-ए-राशिदा के दौर का अंत हो गया।

कल्कि की एक निशानी यह बताई गई है कि युद्ध में उनकी मदद करने के लिए आकाश से फ़रिश्ते उतरेंगे।[1]

यह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दौर में इस्लामी जिहाद की एक प्रमुख निशानी है। आपके युद्धों में आकाश से फ़रिश्ते उतरा करते थे। उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है : "जब तुम अपने पालनहार को (बद्र के युद्ध के समय) गुहार रहे थे। तो उसने तुम्हारी प्रार्थना सुन ली। (और कहा :) मैं तुम्हारी सहायता के लिए लगातार एक हज़ार फ़रिश्ते भेज रहा हूँ।" सूरा अल-अनफ़ाल : 9

[1] कल्कि पुराण, अध्याय : 2, श्लोक : 7।

हिंदू धर्म ग्रंथों के अनुसार कल्कि पहाड़ में जाकर एक महान फ़रिश्ते परशुराम से विद्या ग्रहण करेंगे, फिर उत्तर की दिशा जाएँगे, फिर इससे पहले कि अल्लाह उनको आकाश की ओर उठा ले, वह अपने ग्राम में वापस आ जाएँगे।[1]

हिंदू मान्यता अनुसार परशुराम एक बड़े फ़रिश्ता हैं, जो काफ़िरों पर यातना लाते हैं, मुसलमानों की मान्यता के मुताबिक़ वह जिबरील हैं।

हम देखते हैं कि अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हिरा पर्वत पर गए, वहाँ आपपर जिबरील उतरे, फिर आप मक्का छोड़ उत्तर की दिशा में मदीना गए और अपनी मृत्यु से कुछ समय पहले विजयी बनकर मक्का वापस आए।

हिंदू धर्म ग्रंथों के अनुसार कल्कि अंतिम दूत होंगे।[2]

और शायद यह बताने की ज़रूरत न हो कि नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अंति नबी एवं रसूल

---

[1] कल्कि पुराण, अध्याय : 3, श्लोक : 1-5।

[2] भागवत पुराण, स्कंद : 1, अध्याय : 3, श्लोक : 25।

हैं। "मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तुम्हारे पुरुषों में से किसी के पिता नहीं, बल्कि अल्लाह के संदेशवाहक और समस्त नबियों की अंतिम कड़ी हैं।" सूरा अल-अहज़ाब : 40

हिंदू धर्म ग्रंथों में आने वाले नबी की एक विशेषता यह बयान की गई है कि वह अल्लाह की बहुत ज़्यादा प्रशंसा करने वाले होंगे ... नराशंस।

नराशंस शब्द का अर्थ है, बहुत ज़्यादा प्रशंसा करने वाला।

यानी मुहम्मद अथवा अहमद।

और यह दोनों नाम अंतिम रसूल के हैं। वह मुहम्मद भी हैं और अहमद भी।

नराशंस की अन्य विशेषताएँ इस प्रकार आई हैं : "वह ऊँट की सवारी करेंगे, उनकी बारह पत्नियाँ होंगी और वह

अपनी सवारी पर सवार होकर आकाश को छुएंगे और फिर उतर आएँगे।"[1]

यह विशेषताएँ अल्लाह के नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अतिरिक्त किसी पर फिट नहीं बैठतीं।

जहाँ तक उनकी सवारी ऊँट होने की बात है, तो यह बात अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जीवन से अवगत हर व्यक्ति जानता है। इसमें एक महत्वपूर्ण संकेत भी है। अगरचे हिंदू धर्म ग्रंथ यह बताते हैं कि वह अंतिम ऋषि होंगे, लेकिन यहाँ इशारा यह मिलता है कि वह बसों और हावाई जहाज़ों के आविष्कार से पहले जन्म लेंगे।[2]

इसमें एक और संकेत है। वह आने वाला नबी हिंदू के ब्रह्मण में से नहीं होगा। क्योंकि ब्रह्मण हिंदू ऊंट को वर्जित और हराम मानते हैं।

---

[1] अथर्वेद, काण्ड : 20, सूक्त : 127, मंत्र : 2।

[2] दावह अल-हिंदूस इला अल-इस्लाम, लेखक : डा. इबराहीम अब्दुल ग़फ़ूर, पृष्ठ : 215।

जहाँ तक बारह पत्नियाँ होने की बात है, तो इससे भी अल्लाह के नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जीवन को पढ़ने वाला हर व्यक्ति अवगत है।

और जहाँ तक अपनी सवारी पर बैठकर आकाश को छूने और फिर लौट आने की बात है, तो इसमें इसरा और मेराज की घटना की ओर संकेत है, जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आकाश की यात्रा की थी। इसपर सारे मुसलमानों का विश्वास है।

पवित्र हिंदू धर्म ग्रंथ नराशंस की हिजरत के बारे में बात करते हैं और उनकी प्रशंसा करते हैं। कहते हैं : "हे लोगो, नराशंस का सम्मान करो, मैं उस हिजरत (आप्रवासन) करने वाले तथा शांति स्थापित करने वाले की सुरक्षा करता हूँ।"[1]

उस हिजरत करने वाले : अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जीवन की एक बहुत बड़ी घटना मक्का

[1] अथर्वेद, कांड : 20, सूक्त : 127, मंत्र : 1।

से मदीने की ओर पलायन थी, जो लोगों के बीच शांति एवं एकेश्वरवाद को फैलाने के लिए की गई थी।

उसके बाद वाले मंत्र में उनके युद्ध के बारे में बात करते हुए कहते हैं : "स्तुति करने वाला स्तुति करने वालों के साथ युद्ध के लिए निकलेगा और लोगों को शांति प्रदान करेगा।"[1]

इस तरह देखें तो वह योद्धा नबी होंगे, जो अपने जिहाद द्वारा लोगों के बीच शांति फैलाएँगे।

हिंदू धर्म ग्रंथों में इस्लाम, इस्लाम के पैग़ंबर, आपकी जीवन वृत्तान्त, आह्वान और पवित्र मक्का के बारे में सुसमाचार युक्त दसयों मंत्र मौजूद हैं।

कुछ हिंदुओं को इनमें से कुछ मंत्रों के बारे में मतभेद हो सकता है, और वे इस बात का इनकार कर सकते हैं कि ये मंत्र अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बारे में स्पष्ट संकेत देते हैं। लेकिन यह बातें ऐसी हैं कि इनसे एक हिंदू शोधकर्ता को अधिक विचलित नहीं होना चाहिए। क्योंकि

[1] अथर्वेद, कांड : 20, सूक्त : 127, मंत्र : 5 और उसके बाद के मंत्र।

बुनियादी तौर पर ये सुसमाचार संतुष्टि मात्र के लिए प्रस्तुत किए जाते हैं। यही कारण है कि अलग-अलग प्रकार के बहुत-से सुसमाचार होने के बावजूद मैंने कुछेक ही यहां लिखा है। क्योंकि इस्लाम के एक सच्चा धर्म होने का सबसे बड़ा प्रमाण खुद इस्लाम का संदेश, एकेश्वरवाद का आह्वान, प्रकृति की आवाज़ और उसके अतिरिक्त धरती के सारे धर्मों का इन्सान के इस ज़रूरी प्रश्न का उत्तर न दे पाना है कि मनुष्य की सृष्टि का उद्देश्य क्या है और उसका अंत कैसा होने वाला है?

आज धरती पर भ्रमित करने वाली मूर्ति पूजा, बहुदेववाद और नास्तिकता के अतिरिक्त कुछ नहीं बचा है। बस इस्लाम ही एकमात्र धर्म है, जो साफ़-सुथरे एकेश्वरवाद पर क़ायम है।

"आप कह दीजिए कि वह अल्लाह एक है। अल्लाह निस्पृह है। न उसने (किसी को) जना और न (किसी ने) उसको जना है। और न उसके बराबर कोई है। सूरा अल-इख़लास।

18- इस्लाम क्या है?

उत्तर : इस्लाम का अर्थ है अल्लाह के सामने आत्म समर्पण, उसके सामने झुकने और उसकी बात मानने का।

उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है : "तथा उस व्यक्ति से अच्छा किसका धर्म हो सकता है, जिसने स्वयं को अल्लाह के लिए झुका दिया, वह एकेश्वरवादी भी हो और एकेश्वरवादी इबराहीम के धर्म का अनुसरण भी कर रहा हो? और अल्लाह ने इबराहीम को अपना विशुद्ध मित्र बना लिया है।" सूरा अन-निसा : 125

"स्वयं को अल्लाह के लिए झुका दिया" का अर्थ है : अल्लाह के सामने आत्मसमर्पण किया, उस महान एवं पवित्र अल्लाह का अधीन हो गया, अपने रब की पवित्रता गुण-गान किया, और यही सब से उत्तम तरीक़ा एवं धर्म है।,

एक अन्य स्थान में अल्लाह तआला ने कहा है : "अतः, तुम्हारा पूज्य एक ही पूज्य है, उसी के आज्ञाकारी रहो

और (हे नबी!) आप शुभ सूचना सुना दें विनीतों को।" सूरा अल-हज्ज : 34

उक्त आयत में "उसी का आज्ञाकारी रहो" का अर्थ है : उसके आदेशों के सामने आत्मसमर्पण करो।

इन आयतों से संकेत मिलता है कि इस्लाम का अर्थ सर्वशक्तिमान अल्लाह के सामने पूर्ण समर्पण, उसकी हर बात को मानना और संतुष्टि और स्वीकृति के साथ उसके विधान और उसके दृष्टिकोण का पालन करना है। यही इस्लाम का सार और उसकी हक़ीक़त है।

इस तरह इस्लाम, अल्लाह के लिए उसके फ़ैसले एवं विधान के सामने आत्मसमर्पण का नाम है।

इस्लाम पूरी मानव जाति के लिए अल्लाह का धर्म है। महान अल्लाह ने कहा है : "निःसंदेह अल्लाह के निकट धर्म केवल इस्लाम है।" सूरा आल-ए-इमरान : 19 इस्लाम ही एकमात्र ऐसा धर्म है, जिसके अतिरिक्त अल्लाह दूसरे धर्मों को स्वीकार नहीं करेगा। "और जो भी इस्लाम के सिवा (किसी

और धर्म) को अपनाएगा, उसे उसकी तरफ़ से कदापि स्वीकार नहीं किया जाएगा और वह प्रलोक में घाटा उठाने वालों में से होगा।" सूरा आल-ए-इमरान : 85

इस्लाम वह धर्म है, जिसके साथ अल्लाह ने सभी नबियों और रसूलों को भेजा। सभी नबियों का धर्म एक है और वह है इस्लाम है, और सभी पैगंबर एकेश्वरवाद के साथ आए, भले ही उनके विधान अलग-अलग हों।

उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है : "आपसे पहले जो भी सन्देशवाहक हमने भेजा, उसपर यही वह्य की कि मेरे अतिरिक्त कोई वास्तविक पूज्य नहीं, इसलिए, तुम मेरी ही उपासना करो।" सूरा अल-अंबिया : 25

इस एकेश्वरवाद पर इस्लाम के अलावा कोई भी धर्म बाक़ी न रहा।

इस्लाम आज पृथ्वी पर एकमात्र एकेश्वरवादी धर्म है।

दूसरी शरीयतों के मानने वालों के यहाँ कुछ न कुछ शिर्क पाया जाता है, कम हो या ज़्यादा। नबियों की मौत, एवं

लोगों के एकेश्वरवाद की राह को छोड़ने के बाद, समय गुज़रने के साथ लोग शिर्क को अपनाने लगे, यहाँ तक कि आज स्थिति यह है कि इस्लाम के सिवा कोई भी धर्म शुद्ध एकेश्वरवाद के पथ पर बाक़ी नहीं है।

यह इस्लाम के सही होने का सबसे बड़ा प्रमाण है। हमारे हिंदू भाइयों को जिस बात पर ध्यान देना चाहिए, वह इस धर्म का साफ़-सुथरा एकेश्वरवाद का संदेश है।

19- क्या इस्लाम के पास, हम कहाँ से आए हैं, हम इस दुनिया में क्यों आए हैं और हम कहाँ जाने वाले हैं, जैसे प्रश्नों का उत्तर है, जिनको जानने के लिए इन्सान हमेशा परेशान रहा है?

उत्तर : इस्लाम ने इन सभी प्रश्नों का उत्तर क़ुरआन की एक ही आयत में दे दिया है। पाक अल्लाह ने कहा है : "तथा मुझे क्या हुआ है कि मैं उसकी इबादत (वंदना) न करूँ, जिसने मुझे पैदा किया है? और तुम सब उसी की ओर फेरे जाओगे।" सूरा यासीन : 22

हम कहाँ से आए? इसका उत्तर यह दिया गया है कि हमें अल्लाह ने पैदा किया है।

हम कहाँ जाने वाले हैं? इसके जवाब में कहा गया है कि हमें अल्लाह ही की ओर लौट कर जाना है एवं अपने कर्मों का हिसाब देना है।

हम इस दुनिया में क्यों आए हैं? इसको स्पष्ट करते हुए कहा गया है कि अल्लाह की इबादत के लिए और इसलिए कि हमारी परीक्षा हो।

हम अल्लाह की इबादत क्यों करें? यह स्वाभाविक है कि हम उसी की आराधना करें, जिसने हमें पैदा किया है। यह, बंदा एवं उसके रब के बीच का स्वभाविक संबंध है कि बंदा अपने रब एवं पैदा करने वाले की इबादत करे।

केवल एक ही आयत में मानव को परेशान करने वाले तीन महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर दे दिए गए हैं। "तथा मुझे क्या हुआ है कि मैं उसकी इबादत (वंदना) न करूँ, जिसने मुझे पैदा किया है? और तुम सब उसी की ओर फेरे जाओगे।" सूरा यासीन : 22

20- हम कैसे जानें कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह के पैग़ंबर और संदेष्टा हैं?

उत्तर : जब अलग-अलग प्रकार के प्रमाण मौजूद हों, तो इससे विश्वस्त रूप से वर्णन की निरंतरता तथा पूर्ण विश्वास प्राप्त होता है।

चुनांचे अरस्तू अपने समुचित कार्यों के कारण दार्शनिक हैं, उनके कहे हुए किसी एक वाक्य या उनके द्वारा किए गए किसी एक दार्शनिक विश्लेषण के कारण नहीं।

इसी तरह हिपोक्रेट्स (बुकरात) अपने समुचित चिकित्सा परियोजनाओं के कारण चिकित्सक हैं, उनके द्वारा किए गए किसी सर्जरी के कारण नहीं।

इसी तरह, अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से वर्णित अलग-अलग प्रकार के चमत्कार यह सिद्ध करते तथा इस बात का पूर्ण विश्वास प्रदान करते हैं कि आप अल्लाह के नबी हैं।

जब आप मुहम्मद -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- की जीवनी को देखेंगे, तो आप उन्हें सच्चा पाएँगे। आपकी सच्चाई को आपके सबसे बड़े शत्रु ने स्वीकार किया। आपपर कभी झूठ या अनैतिकता का आरोप नहीं लगा। फिर आपने जिन चीज़ों की भविष्यवाणी की, वह वैसे ही घटित हुईं, जैसे आपने भविष्यवाणी की थी। इसके अलावा आपने जिन आस्थाओं की ओर बुलाया, वे सभी पूर्व के नबियों की आस्थाओं के साथ मेल खाती हैं। फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आने की शुभ सूचना, आपके आने से सैकड़ों साल पहले नबियों ने दे दी थी। यह तमाम बातें आपके दूतत्व की सत्यता पर मुहर लगाती हैं।

फिर आपके द्वारा लाए गए सबसे बड़े चमत्कार यानी क़ुरआन का क्या कहना?

क़ुरआन, जिसके द्वारा अल्लाह ने साहित्यकारों को चुनौती दी कि वे इसके जैसी एक किताब या एक सूरा ही रच कर दिखाएँ, परन्तु वे कर नहीं सके।

"क्या यह लोग यह कहते हैं कि आपने उसको गढ़ लिया है? आप कह दीजिए कि तो फिर तुम उसकी तरह एक ही सूरा लाओ और अल्लाह के अतिरिक्त जिनको भी बुला सको बुला लो, अगर तुम सच्चे हो।" सूरा यूनुस : 38

उच्च एवं महान अल्लाह ने पवित्र क़ुरआन में कहा है : "और यदि तुम्हें उसमें कुछ संदेह हो, जो (क़ुरआन) हमने अपने बंदे पर उतारा है, तो उसके समान कोई सूरा बनाकर ले आओ और अपने समर्थकों को भी, जो अल्लाह के सिवा हों, बुला लो, यदि तुम सच्चे हो। और यदि ये न कर सको तथा कर भी नहीं सकोगे, तो उस अग्नि (नरक) से बचो, जिसका ईंधन मानव तथा पत्थर होंगे।" सूरा अल-बक़रा : 24 ज़रा अल्लाह के इस कथन को देखिए : "तुम नहीं कर सके, और तुम कभी नहीं कर सकते"। सूरा अल-बक़रा : 24

वे न उस काम को कर सके, और न ही वे उसकी क्षमता रखते हैं।

कुरआन लगातार बहुदेववादी भाषाविदों एवं साहित्यकारों को चुनौती देता रहा, परन्तु वे उसका मुक़ाबला

करने की हिम्मत नहीं जुटा सके और उस जैसी दूसरी किताब लाकर सामने रख नहीं सके।

डा० अब्दुल्लाह दराज़ -अल्लाह उनपर रहम करे- कहते हैं : "क्या रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को डर नहीं लगा कि यह चुनौती उन (अविश्वासियों) के साहित्यिक अभिमान को भड़का देगी?

और फिर सब लोग पूरी मुस्तैदी के साथ उसका मुक़ाबला करने के लिए उठ खड़े होंगे? फिर आप क्या करते यदि उनके भाषाविदों का एक समूह आपस में यह निर्णय कर लेता कि सब मिलकर उसके जैसी वाणी तैयार करके प्रस्तुत करेंगे, चाहे कुछ मामलों में ही क्यों न हो!!

फिर अगर उनकी आत्मा ने उनको अपने समय के लोगों पर यह चुनौती देने पर मजबूर किया होता, तो बात और थी, लेकिन उन्होंने तो आने वाली नस्लों को भी चुनौती दे डाली!!

यह एक ऐसा साहसिक कार्य है, जिसमें अपनी क्षमता जानने वाला व्यक्ति कभी कदम नहीं उठाएगा। यह क़दम वही उठा सकता है, जो आकाश में होने वाले निर्णयों एवं सूचनाओं से अवगत हो। इस प्रकार हम देखते हैं कि जो चुनौती आपने दुनिया को दी, वह अल्लाह का निर्णय था। इसलिए उसका मुक़ाबला करने की कोशिश करने वाला हर व्यक्ति हर ज़माने में नाकाम व नामुराद साबित हुआ।[1]

इन बहुदेववादियों ने देखा कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से लड़ने के लिए सेनाओं और दलों को इकट्ठा करना, क़ुरआन का विरोध करने और चुनौती को स्वीकार करने की तुलना में अधिक आसान है। वह यही कर सकते थे, इससे ज़्यादा कुछ नहीं। "तथा काफ़िरों ने कहा कि इस क़ुरआन को न सुनो और कोलाहल (शोर) करो इस (के सुनाने) के समय। संभवतः, तुम विजय प्राप्त कर लो

[1] "अल-नबा अल-अज़ीम (महान सूचना), डा० अब्दुल्लाह दराज़, पृष्ठ: 44, 45।

(मुहम्मद पर और वह इसे पढ़ना छोड़ दे)।" सूरा फ़ुस्सिलत : 26

अतः सारे अरब के लोग और वह सारे संप्रदाय, जिन तक यह चुनौती पहुँची, कुछ ऐसा नहीं कर सके, जिससे खुद नास्तिकों को सुकून मिलता और दूसरों के लिए सुकून का ज़रिया बनता।

अलूसी -उनपर अल्लाह रहम करे- कहते हैं : "तबसे लेकर आज तक उनमें से किसी के द्वारा भी एक शब्द प्रस्तुत नहीं किया जा सका।"

जुबैर बिन मुत्इम ने उस समय कहा था, जब वह मुसलमान नहीं हुए थे : मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मग़रिब में सूरा तूर पढ़ते हुए सुना। जब आप इस आयत को पहुँचे : "क्या यह लोग बिना किसी पैदा करने वाले के स्वयं पैदा हो गए हैं या यह स्वयं पैदा करने वाले हैं? या उन्होंने ही पैदा किया है आकाशों तथा धरती को? वास्तव में, वे विश्वास ही नहीं रखते हैं। या फिर उनके पास आपके रब के

ख़ज़ाने हैं या वही (उसके) अधिकारी हैं? सूरा अत-तूर : 35-37

वह कहते हैं : मुझे ऐसा लग रहा था, जैसे मेरा दिल अभी उड़ जाएगा।"[1]

क़ुरआन में बड़े अद्भुत रहस्य हैं, जो सीधे आत्मा तक पहुँचते हैं।

इसपर विचार करें कि जब अबू बक्र क़ुरआन पढ़ते थे, तो उससे आकर्षित और प्रभावित होकर, उनके घर के आसपास कैसे बहुदेववादी महिलाओं की भीड़ इकट्ठा हो जाया करती थी, यहाँ तक कि क़ुरैश के लोग इससे भयभीत हो गए थे।[2]

यही कारण है कि अरब के सारे प्रतिनिधि इस बात पर सहमत हो गए थे कि उन्हें क़ुरआन नहीं सुनना चाहिए और

[1] सहीह बुख़ारी, हदीस संख्या : 4854।

[2] सहीह बुख़ारी, हदीस संख्या : 3905।

उनके परिवारों को भी इसे नहीं सुनाना चाहिए। अविश्वास पर डटे रहने का यही एकमात्र उपाय है।

महान क़ुरआन के चमत्कारों, जो कभी ख़त्म नहीं होंगे, में से एक चमत्कार वह है, जिसे अब्दुल्लाह दराज़ -अल्लाह उनपर दया करे- ने अलग-अलग समय पर क़ुरआन की आयतों के उतरने के मसले में बयान किया है। उनका कहना है कि एक तो क़ुरआन की आयतें अलग-अलग समयों में उतरीं और फिर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अलग-अलग आयतों को अलग-अलग सूरों के निश्चित स्थानों में रखने का निर्देश दिया और उसके बाद जब यह सूरतें मुकम्मल हुईं, तो एक संपूर्ण इकाई की तरह दिखने लगीं। वह कहते हैं : "क़ुरआन के उतरने के समय क़ुरआन के कुछ स्थान दूसरे स्थानों से अलग प्रतीत होते थे। फिर बाद में जो आयतें उतरती थीं, तो रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आदेश, जिसे आप जिबरील अलैहिस्सलाम के माध्यम से प्राप्त करते थे, के अनुसार कुछ आयतों को यहाँ जोड़ा जाता

रहा, कुछ आयतों को वहाँ और कुछ को बीच में, यहाँ तक कि वह आहिस्ता-आहिस्ता स्वतंत्र इकाइयाँ वजूद में आ गईं।

जब हम इतिहास को देखते हैं, विशेषकर पवित्र क़ुरआन की आयतों के उतरने के इतिहास को, तो पाते हैं कि आम तौर पर वह्य विशेष परिस्थितियों और अवसरों से संबंधित थी, जो हमसे समय के बारे में प्रश्न करता है कि कब हर सूरा को अलग-अलग इकाई के रूप में संगठित करने का कार्य पूरा हुआ?

गोया क़ुरआन किसी पुरानी इमारत के भिन्न-भिन्न किये हुए और गिने हुए टुकड़ों की शक्ल में था। तथा इसे पहली शक्ल में ही एक अलग स्थान पर फिर से बनाने का इरादा था। अन्यथा, एक ही समय में इस तात्कालिक, व्यवस्थित और तथ्यात्मक तरतीब की कैसे व्याख्या की जा सकती है, विशेषकर जब बहुत-सी सूरतों का मामला हो?

परंतु भविष्य की घटनाओं, उनकी विधायी आवश्यकताओं और उनके लिए वांछित समाधानों की ऐसी शानदार योजना बनाते समय, वो भी ऐसे भाषाई स्वरूप में, जो

इन समाधानों को प्रस्तुत करने के लिए ज़रूरी है और जिसकी शैली इस सूरा के अनुरूप है, उस सूरा के नहीं, एक इनसान ऐसी सम्पूर्ण शैली कौन-सी ऐतिहासिक गारंटी के द्वारा प्राप्त कर सकता है?

क्या हम इसका यह नतीजा निकाल नहीं सकते कि इस योजना को पूरा करने तथा वांछित तरीक़े से इसकी प्राप्ति के लिए महान सृष्टिकर्ता के हस्तक्षेप की आवश्यकता है, जिसके पास इस वांछित समन्वय को स्थापित करने की पूरी क्षमता मौजूद है?"[1]

अतः क़ुरआन अपनी जगह मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सच्चे नबी होने का एक स्थाई प्रमाण है।

अल्लाह के नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हाथों से बहुत-से चमत्कार सामने आए, जिनकी संख्या हज़ार से अधिक है। उनको लोगों ने अपनी आँखों से

[1] "मद्खल इला अल-क़ुरआन अल-करीम", डा० अब्दुल्लाह दराज़।

देखा एवं उनको वर्णन करने वाले सृष्टि के सबसे सच्चे और सबसे नेक लोग हैं।

जिन लोगों ने हमारे लिए इन चमत्कारों का वर्णन किया है, वे छोटी-मोटी बातों में भी झूठ को कदापि उचित नहीं समझते थे, फिर आपकी ओर निस्बत करके झूठ कैसे बोल सकते थे? वे इस सत्य को भी अच्छी तरह जानते थे कि जिसने जान बूझ कर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर झूठ गढ़ा, उसका ठिकाना जहन्नम है, जैसा कि खुद अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने चेतावनी दी है।

आपके कुछ चमत्कारों को हज़ारों सहाबा ने देखा और कुछ चमत्कारों को दसियों सहाबा ने रिवायत किया है। क्या इतने सारे लोग इन सारी बातों में झूठ पर एकमत हो सकते हैं?

आपके उन चमत्कारों का उदाहरण, जिनके गवाह बहुत बड़ी संख्या में लोग बने, तने के रोने वाली हदीस है। यह बहुत प्रसिद्ध एवं मुतावातिर (जिसके वर्णनकर्ताओं के सिलसिले की हर कड़ी में बड़ी संख्या में लोग हों) हदीस है। अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक ख़जूर के

तने पर टेक लगाकर ख़ुतबा दिया करते थे। जब आपके लिए मिंबर तैयार कर लिया गया और आप उसपर चढ़कर ख़ुतबा देने लगे, तो खजूर का वह तना बहुत उदास हो गया और बच्चे की तरह कराह कर रोने लगा। वह इसी प्रकार आपके शोक में उदास और रोता रहा, यहाँ तक कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसको गले लगाया, तब जाकर वह चुप हुआ।"

इस हदीस को सहाबा में से अनस बिन मालिक, जाबिर बिन अब्दुल्लाह, अब्दुल्लाह बिन अब्बास, अब्दुल्लाह बिन उमर, उबय बिन काब, अबू सईद, सहल बिन साद, आइशा बिन्त अबू बक्र और उम्मे सलमा ने रिवायत किया है।

क्या इतने सारे सहाबा इस तरह की सूचना देने में झूठ बोलने पर सहमत हो सकते हैं?

बल्कि आपके कुछ चमत्कारों को हज़ारों सहाबा ने देखा। जैसा कि आपकी पवित्र उंगलियों के बीच से पानी की धारा प्रवाहित होने वाला चमत्कार। उस पानी को पंद्रह सौ

सहाबा ने पिया और सबने उससे वज़ू भी किया। यह हदीस मुतावातिर है एवं इसे बुख़ारी एवं मुस्लिम ने रिवायत किया है।

इसी तरह थोड़े-से खाने को अधिक कर देने का चमत्कार, ताकि उससे एक बड़ी सेना का पेट भर जाए। यह हदीस भी मुतावातिर है और सहाबा की एक बड़ी संख्या ने इसे रिवायत किया है। इमाम बुख़ारी ने अपनी किताब सहीह बुख़ारी में खाना ज़्यादा करने के चमत्कार को पाँच स्थानों में ज़िक्र किया है।[1]

अतः जब सत्य के प्रमाण साबित हैं और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नबी होने के चमत्कार भरे पड़े हैं, तो कहाँ तक एक बुद्धिमान के लिए उचित है कि वह इन तमाम तथ्यों को झुठलाए?

यहाँ आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चमत्कारों के कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं:

---

[1] सहीह बुख़ारी, हदीस़ संख्या : 1217, 2618, 3578, 4101 और 6452। ये सभी अलग-अलग घटनाएँ हैं। इतनी सारी घटनाएँ केवल बुख़ारी में हैं।

एक रात अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने लोगों को बताया कि आज बहुत सख़्त हवा चलेगी और आपने लोगों को खड़े होने से मना किया, परन्तु एक व्यक्ति (अपने किसी काम के लिए) खड़ा हुआ, तो उसको हवा ने उठा कर उसके स्थान से दूर एक स्थान में पहुँचा दिया।[1]

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने नज्जाशी की मौत की सूचना उसी दिन दे दी, जिस दिन उनकी मृत्यु हुई और आपने उनकी (गाएबाना) नमाज़-ए-जनाज़ा में चार बार तकबीर पढ़ी।[2]

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उमर, उसमान, अली, तलहा और ज़ुबैर -अल्लाह उन सबसे राज़ी हो- की शहादत की सूचना दे दी थी और बता दिया था कि वे आम लोगों की तरह बिस्तर पर नहीं मरेंगे।

एक दिन अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, अबू बक्र, उमर, उसमान, अली, तलहा और ज़ुबैर -

---

[1] सहीह मुस्लिम, हदीस संख्या : 3319।

[2] सहीह बुख़ारी, हदीस संख्या : 1333।

अल्लाह उनसे राज़ी हो- पहाड़ पर चढ़े, तो चट्टान में हरकत होने लगी। यह देख अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पहाड़ से फ़रमाया : "शांत हो जाओ, तुम्हारे ऊपर नबी, सिद्दीक़ और शहीद हैं"।[1]

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने को नबी, अबू बक्र को सिद्दीक़ और शेष लोगों को शहीद कहा और वही हुआ, जिसकी आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सूचना दी थी।

इसी तरह एक सौ पचास हदीसें ऐसी हैं, जिनमें अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने रब से दुआ की और वह उसी समय क़बूल हुई और लोगों ने यह सब कुछ अपनी आँखों से देखा।[2]

[1] सहीह मुस्लिम, हदीस संख्या : 2417।

[2] सईद बिन अब्दुल क़ादिर बाशंफर ने इन हदीसों को अपनी पुस्तक "दलाइल अल-नुबूवत" (دلائل النبوة) में एकत्रित किया है। यह पुस्तक दार इब्ने हज़्म से प्रकाशित हुई है।

इसी तरह मक्का वालों ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कोई निशानी दिखाने की माँग की (जो उनकी नुबूवत की पुष्टि करे), तो आपने उन्हें चाँद को दो टुकड़े करके इस तरह दिखाया कि लोगों ने चाँद के दोनों टुकड़ों के बीच हिरा पहाड़ को देखा। यह हदीस़ मुतावातिर है। अर्थात यह सत्यता के उच्चतम स्तर पर है।

आप सूरा क़मर को, जिसमें चाँद के टुकड़े होने के चमत्कार का उल्लेख है, जुमा एवं ईद की बड़ी सभाओं में पढ़ते थे, ताकि उसमें जिस चमत्कार का ज़िक्र है, उसे लोग सुनें और आपके सच्चे नबी होने की पुष्टि करें।

इसी तरह आपने बताया कि आदम जानदार सृष्टियों में सबसे अंतिम सृष्टि हैं। फ़रमाया : "आदम जुमा के दिन अस्र के बाद सबसे अंत में पैदा होने वाली सृष्टि हैं।"[1]

यह तथ्य अब वैज्ञानिक रूप से सिद्ध हो चुका है। विज्ञान ने सिद्ध कर दिया है कि मनुष्य पृथ्वी पर प्रकट होने

[1] सहीह अल-जामे, हदीस संख्या : 8188।

वाला अंतिम जीवित प्राणी है। अब भला आप बताएँ कि अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह कैसे पता चला कि आदम अलैहिस्सलाम वनस्पति तथा जानवरों के प्रकट होने के बाद धरती पर सबसे अंत में प्रकट हुए?

सर्वशक्तिमान एवं महान अल्लाह के इस कथन को देखिए : "और हमने रात्री तथा दिवस को दो प्रतीक बनाया, फिर रात्री के प्रतीक को हमने अन्धकार बनाया तथा दिवस के प्रतीक को प्रकाशयुक्त।" सूरा अल-इस्रा : 12

हम रात की निशानी को मिटा देते हैं, अर्थात चाँद, जो रात की निशानी है और जो रौशन था, उसकी रोशनी मिटा दी गई।

सहाबा -अल्लाह उनसे राज़ी हो- ने इस आयत की व्याख्या इसी प्रकार की है। इमाम इब्ने कसीर ने अपनी तफ़सीर में अब्दुल्लाह बिन अब्बास -अल्लाह उन दोनों से राज़ी हो- से रिवायत किया है, वह कहते हैं : "चाँद सूरज की तरह चमक रहा था, जो रात की निशानी है, फिर उसे मिटा दिया गया।"

अजीब बात यह है कि आज विज्ञान भी इसी परिणाम तक पहुँचा है। नासा ने अपनी आधिकारिक वेबसाइट और आधिकारिक चैनल पर प्रकाशित किया है : चाँद के जीवन के पहले युग में वह चमकदार और सख़्त गर्म था।[1]

यह बात विश्वस्त तरीक़े से साबित है कि अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हाथों अनगिनत निशानियाँ सामने आईं, आपने गैब की अनगिनत सूचनाएँ प्रदान कीं एवं धरती तथा आकाशों के अनगिनत सूक्ष्म रहस्यों को सामने रखा, आपपर क़ुरआन उतरा, आपने पूर्व के नबियों का मार्ग दिखाया, आपको अल्लाह की ओर से सहयोग प्राप्त हुआ और आप उस समय तक दुनिया से विदा नहीं हुए, जब तक आपकी शरीयत संपूर्ण नहीं हो गई।

अतः अक़्ल यही कहती है कि आप अल्लाह के रसूल हैं।

---

[1]http://www.nasa.gov/mission_pages/LRO/news/vid-tour.html

https://www.youtube.com/watch?v=UIKmSQqp8wY

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के द्वारा गैब के बारे में कही गई बातों की संख्या हज़ार से अधिक है।

और इन बातों को सृष्टि के सबसे सच्चे एवं नेक लोगों यानी सहाबा ने रिवायत किया है।

अजीब बात यह है कि बड़े सहाबा ने चमत्कारों को देखे बग़ैर इस्लाम धर्म अपना लिया। वे इस्लाम ले आए क्योंकि वे जानते थे कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सच्चे हैं और उन्होंने कभी झूठ नहीं बोला।

यह बड़े सहाबा का निर्णय था, जो एक बुद्धिमान एवं समझदार निर्णय था। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हमेशा सच बोलना आपकी नबूवत साबित करने के लिए एक पर्याप्त तर्क है। यह इस लिए कि जो व्यक्ति नुबूवत का दावा कर रहा है, या तो वह लोगों में सबसे सच्चा होगा, क्योंकि वह नबी है, और नबी लोगों में सबसे सच्चा इंसान होता है

या फिर वह लोगों में सबसे झूठा इंसान होगा, क्योंकि वह इतने बड़े एवं महत्वपूर्ण मामला में झूठ गढ़ रहा है।

और सबसे बड़े सच्चे तथा सबसे बड़े झूठे इन्सान के बीच अंतर करने में चूक उसी से होगी, जो सबसे बड़ा मूर्ख हो।

सबसे सच्चे इंसान और सबसे झूठे इंसान के बीच अंतर करना एक बुद्धिमान के लिए बहुत ही आसान है।

अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नबी बनाए जाने के पहले दिन ही मक्का के बहुदेववादियों ने स्वीकार किया था कि आप कभी झूठ नहीं बोतले हैं। उन लोगों ने आपसे कहा था : "हमने आपको कभी झूठ बोलते हुए नहीं देखा।"[1]

इसी तरह जब हिरक़्ल ने अबू सुफ़यान से उनके इस्लाम लाने से पूर्व पूछा : "क्या तुम लोग उनके वह कहने से पहले जो अभी कह रहे हैं, उनपर झूठ का आरोप लगा रहे थे?"

अबू सुफ़यान ने कहा: "नहीं।"

---

[1] सहीह बुख़ारी, हदीस संख्या : 4971।

यह सुन हिरक़्ल ने कहा: "ऐसा नहीं हो सकता है कि वह लोगों के मामले में तो झूठ त्याग दे और अल्लाह के मामला में झूठ बोले।"

फिर हिरक़्ल ने अपनी बात पूरी करते हुए यह प्रसिद्ध वाक्य कहा : "यदि मैं उनके पास होता तो उनके दोनों पैर धोता।"[1]

मक्का के काफिर आपके पूरे जीवन में आपके एक भी झूठ को उजागर करने में असमर्थ रहे। यही कारण है कि क़ुरआन ने आपके नबी बनने से पहले से ही आप के हाल से अवगत होने के बावजूद आपकी बात न मानने पर काफ़िरों का खंडन किया है। उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है : "अथवा वह अपने रसूल से परिचित नहीं हुए, इसलिए वे उसका इनकार कर रहे हैं?" सूरा अल-मूमिनून : 69

[1] सहीह बुख़ारी, हदीस संख्या : 7।

अतः अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का जीवन एवं आपकी सीरत आपके नबी होने पर एक संपूर्ण प्रमाण है।

आप पर अल्लाह की रहमत और सलामती हो।

जब अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के एक सच्चा इन्सान होने के बहुत-से प्रमाण मौजूद हैं और सब यह बता रहे हैं कि आप अल्लाह के नबी हैं, तो कहाँ तक एक बुद्धिमान हिंदू व्यक्ति के लिए उचित है कि वह इन तमाम तथ्यों को झुठलाए?

21- क्या अल्लाह पर विश्वास रखना और नबियों के प्रति अविश्वास व्यक्त करना पर्याप्त है, जैसा कि कुछ हिंदू करते हैं?

उत्तर: नहीं,

अल्लाह पर विश्वास रखना और नबियों का इंकार करना पर्याप्त नहीं है। अल्लाह के सामने समर्पण ज़रूरी है। इसका क्या मतलब है कि आप अल्लाह को सृष्टिकर्ता, रोज़ी देने वाला और संचालनकर्ता मानें, लेकिन उसकी वह्य और उसके रसूलों को न मानें?

यह सबसे बड़ा अविश्वास है,

बल्कि अल्लाह की वह्य के इंकार से बड़ा कोई अपराध नहीं हो सकता। महान अल्लाह ने कहा है : "जो लोग अल्लाह और उसके रसूलों पर ईमान नहीं रखते हैं और चाहते हैं कि अल्लाह और उसके रसूलों के बीच अलगाव करें और कहते हैं कि हम कुछ को मानते हैं और कुछ को नहीं मानते हैं और इसके बीच रास्ता बनाना चाहते हैं। यही लोग पक्के

काफ़िर हैं और हमने इन काफिरों के लिए अपमानजनक यातना तैयार कर रखी है।" सूरा अन-निसा : 150-151

अतः जो अल्लाह पर ईमान रखे और नबियों का इनकार करे, वही असल काफ़िर है।

जिसने नबियों में से किसी नबी का इनकार किया, उसने अल्लाह का इनकार किया, इसलिए कि उसने अल्लाह की वह्य का इनकार किया। इसीलिए अह्ले किताब काफ़िर ठहरे, क्योंकि उन्होंने मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- की नुबूवत का इनकार किया। "निःसंदेह, जो लोग अह्ले किताब में से काफ़िर हो गए तथा मुश्रिक (मिश्रणवादी), तो वे सदा नरक की आग में रहेंगे और वही दुष्टतम जन हैं।" सूरा अल-बय्यिना : 6 अल्लाह ने इन लोगों को जहन्नम में धकेलने की धमकी दी है। "और यह एक सच्ची धमकी है।" सूरा क़ाफ़ : 14

बस इतना मान लेने मात्र से इस्लाम पूरा नहीं हो सकता और मुक्ति मिल नहीं सकती कि अल्लाह सृष्टिकर्ता, रोज़ी देने

वाला, जीवन देने वाला और मौत देने वाला है, बल्कि इसके लिए उसके रसूलों पर विश्वास रखना भी ज़रूरी है।

इस प्रकार केवल अल्लाह के अस्तित्व पर ईमान लाना एवं नबियों का इनकार करना प्रयाप्त नहीं है और न ही क़यामत के दिन इस तरह का ईमान अल्लाह के निकट कोई काम देगा। इस लिए ज़रूरी है कि अल्लाह की इबादत की जाए और उसके सारे रसूलों पर ईमान लाया जाए।

यदि अल्लाह के अस्तित्व पर ईमान लाना पर्याप्त होता, तो अल्लाह न रसूलों को भेजता और न ही किताबें उतारता, इसलिए कि सारी मानव जाति अल्लाह को स्वाभाविक रूप से जानती है।

जिस अल्लाह ने आपको पैदा किया, आपको सुपथ दिखाया, खाना दिया, वह अकेला इस योग्य है कि आप उसकी उसी तरह इबादत करें, जिस तरह उसने अपने रसूलों एवं नबियों के द्वारा बताया है।

सभी नबियों तथा अंतिम नबी मुहम्मद सल्लल्लहु अलैहि व सल्लम पर ईमान रखना चाहिए।

22- अल्लाह ने बुराई को क्यों पैदा किया? या दूसरे शब्दों में मुसलमान बुराई की मुश्किल से कैसे अपनी हिफ़ाज़त कर सकता है?

उत्तर : हिंदू धर्म में बुराई का फ़ितना लगभग सबसे बड़ी समस्या है। हिंदू दर्शन इस बात पर आधारित है कि इन्सान पहाड़ों तथा जंगलों में जीवन बिताकर बुराई से छुटकारा पा ले। हिंदू धर्म का मानना है कि बार-बार जन्म उस बुराई के कारण लेना पड़ता है, जिसे इन्सान ने पिछले किसी जीवन में किया होता है।

हालाँकि यह अवधारणा सिरे से गलत है। सीधी सी बात यह है कि बुराई दुनिया में इसलिए मौजूद है कि हम शरीयत को मानने के पाबंद हैं।

इसलिए कि हम परीक्षा कक्ष में हैं।

महान अल्लाह ने कहा है : "और अच्छी और बुरी परिस्थितियों से हम तुम्हें आज़माते हैं।" सूरा अल-अंबिया : 35

अच्छाई और बुराई इसलिए हैं, क्योंकि आप शरीयत को मानने के पाबंद हैं और शरीयत को मानने की यही पाबंदी आपके वजूद (अस्तित्व) का उद्देश्य है।

उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है : "जिसने उत्पन्न किया है मृत्यु तथा जीवन को, ताकि तुम्हारी परीक्षा ले कि तुममें किसका कर्म अधिक अच्छा है? तथा वह प्रभुत्वशाली, अति क्षमावान् है।" सूरा अल-मुल्क : 2

जब हम शरीयत को मानने के पाबंद हैं, तो फ़ितनों और मुसबीतों का होना स्वभाविक है और यह भी स्वभाविक है कि बुराई हो।

बुराई, कुछ कष्ट और अवज्ञा करने की क्षमता मानव इच्छा और अल्लाह के आदेश का पालन करने या न करने की स्वतंत्रता का स्वाभाविक नतीजा है।

बुराई, आज़माइश, विपत्तियाँ और इच्छाएँ, यह ऐसी चीज़े हैं, जो नेक इंसान के अंदर जो भलाई होती है एवं बुरे

इंसान के अंदर जो बुराई होती है, उसे खोल कर बाहर लाती हैं।

बुराई के साथ-साथ हमारे जीवन में इतनी भलाइयाँ हैं कि हम गिन नहीं सकते

तथा इतनी नेमतें हैं कि उनकी गिंती संभव नहीं है।

हमारे जीवन में जो भलाइयाँ हैं, उनकी तुलना में बुराइयाँ बहुत कम हैं।

अगर संसार में बुराई न होती, तो आप उस स्थान से निकलते ही नहीं, जहाँ आप पैदा हुए हैं।

न कोई सभ्यता पाई जाती, न शहर होते, न कारखाने होते, न घरों का निर्माण होता, न लोगों को काम करने की आवश्यकता होती, न वे बीमारी का मुक़ाबला करने, समस्या का समाधान ढूँढ़ने को सोचते और सुख की तलाश की चिंता में पड़ते।

इन्सान को अपने जन्म स्थान से दूसरी जगह जाने की ज़रूरत ही न पड़ती।

क्योंकि न कोई बुराई है, न कोई मुसीबत है, न कोई मेहनत है और न मुश्किलें हैं कि उनका समाधान तलाश किया जाए।

तो फिर क्यों इंसान अपने आपको थकाएगा, रात जागेगा, चिंता में पड़ेगा और काम करेगा?

इसलिए दुनिया में बुराई का होना ज़रूरी है।

इसपर ठीक से सोच विचार करके देखें!

बहुत-से लोगों को जब मुसीबत एवं परेशानी घेरती है, तो वे अल्लाह की ओर लौट जाते हैं और अच्छा काम करने लगते हैं। पाक एवं महान है अल्लाह एवं सारी प्रशंसा उसी की है।

अल्लाह के सभी निर्णयों में हिकमत तथा भलाई है। हो सकता है कि उसके किसी निर्णय में ज़ाहिरी तौर पर बुराई, परेशानी या कष्ट दिखे, लेकिन अंत में उसके अंदर छुपी हुई बड़ी भलाई और शानदार हिकमत सामने आ जाती है।

इस तरह बुराई का अस्तित्व इसलिए है कि आप शरीयत को मानने के पाबंद हैं, इसलिए नहीं है कि आपने पिछले जीवन में पाप कर रखे हैं।

23- सर्वशक्तिमान अल्लाह के प्रति समर्पण की अभिव्यक्तियाँ क्या हैं? या दूसरे शब्दों में, कैसे आपको पता चलेगा कि आप पूर्ण रूप से अल्लाह के प्रति समर्पित हैं?

उत्तर: अल्लाह के समर्पण की चार निशानियाँ हैं और वह यह हैं :

पहली : अपने जीवन के हर छोटे-बड़े कार्य में अल्लाह ही की बंदगी का ख्याल रखना। उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है : "आप कह दें कि निश्चय ही मेरी नमाज़, मेरी कुर्बानी तथा मेरा जीवन-मरण, सारे संसारों के रब अल्लाह के लिए है। जिसका कोई साझी नहीं तथा मुझे इसी का आदेश दिया गया है और मैं प्रथम मुसलमानों में से हूँ।" सूरा अल-अनआम : 162-163

मेरी नमाज़, मेरी कुर्बानी तथा मेरा जीवन-मरण, सारे संसारों केरब अल्लाह के लिए है। मेरे सारे काम अल्लाह के लिए हैं। हर काम में अल्लाह की बंदगी नज़र आनी चाहिए। यह अल्लाह के प्रति समर्पण की पहली निशानी है।

दूसरी निशानी : आप अल्लाह के लिए इस तरह पूर्ण रूप से समर्पित हो जाएँ कि अल्लाह के आदेशों का पालन करें एवं उसकी मना की हुई चीज़ों से दूर रहें। उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है : "हे ईमान वालो! अल्लाह के आज्ञाकारी रहो तथा उसके रसूल के और उससे मुँह न फेरो, जबकि सुन रहे हो।" सूरा अल-अनफ़ाल : 20 एक अन्य स्थान में उसने कहा है : "ऐ ईमान वालो! इस्लाम में पूरे-पूरे प्रवेश कर जाओ।" सूरा अल-बक़रा : 208

इस आयत में आए हुए शब्दों "فِي السِّلْمِ" का अर्थ है, इस्लाम में।

पूर्ण रूप से इस्लाम में प्रवेश कर जाओ, अर्थात अल्लाह के द्वारा दिए गए हर आदेश का पालन करो तथा उसकी मना की हुई हर चीज़ से दूर रहो।

अल्लाह ने मुझे क़ुरआन में जिस चीज़ का आदेश दिया या उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सुन्नत में जिस चीज़ का आदेश दिया है, मैं उसे करूँ और इन दोनों ने

जिस चीज़ से मना किया है, उससे दूर रहूँ, यही अल्लाह के प्रति समर्पण और उसका आज्ञापालन है।

तीसरी निशानी : समर्पण की तीसरी निशानी यह है कि अल्लाह के विधान के सामने अपने आपको झुका दें और उसके हर विधान को राज़ी-खुशी ग्रहण कर लें।

हम क़ुरआन अथवा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत में उल्लिखित हर विधान को ग्रहण करेंगे, क्योंकि अल्लाह जानता है कि उसकी सृष्टि के हित में क्या है। "क्या वह नहीं जानेगा जिस ने उत्पन्न किया? और वह सूक्ष्मदर्शक सर्व सूचित है?" सूरा अल-मुल्क : 14 एक अन्य स्थान में उसने कहा है: "और अल्लाह से अच्छा निर्णय किसका हो सकता है?" सूरा अल-माइदा : 50

अल्लाह ही बेहतर जानता है कि लोगों के लिए दुनिया एवं आख़िरत में क्या अच्छा है।

अल्लाह की शरीयत को लागू करने से साफ़-सुथरे समाज का निर्माण होता है और लोगों को शांतिपूर्ण जीवन प्राप्त होता है।

उच्च एवं महान अल्लाह ने फ़रमाया है : "और हमने जो भी रसूल भेजा, वो इसलिए, ताकि अल्लाह की अनुमति से, उसकी आज्ञा का पालन किया जाए।" सूरा अन-निसा : 64

अल्लाह ने रसूलों को इस लिए नहीं भेजा है कि हम उनके लाए हुए विधान को छोड़ दें एवं अन्य विधानों से निर्णय लें।

उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है : "तो आपके रब की शपथ! वे कभी ईमान वाले नहीं हो सकते, जब तक अपने आपस के विवाद में आपको निर्णायक न बनाएँ, फिर आप जो निर्णय कर दें, उससे अपने दिलों में तनिक भी संकीर्णता (तंगी) का अनुभव न करें और पूर्णतः स्वीकार कर लें।" [65] सूरा अन-निसा। अल्लाह की शरीयत के सामने पूर्ण समर्पण अनिवार्य है और यह इस्लाम के लिए समर्पित होने की निशानी है।

जहाँ तक अल्लाह के प्रति समर्पित होने की चौथी निशानी की बात है, तो वह अल्लाह के द्वारा तय किए हुए भाग्यों को स्वीकार करना है। हर चीज़ को अल्लाह ने अपनी हिकमत के अनुसार लिख रखा है और एक मुसलमान उन लिखे हुए को स्वीकार करता है, चाहे भला हो या बुरा।

यदि मुसलमान के साथ खुशी की कोई बात होती है तो शुक्र अदा करता है और यदि दुःख की कोई बात होती है, तो सब्र करता है।

हर आज़माइश के पीछे कोई हिकमत होती है।

हर चीज़ अल्लाह के भागय के अनुसार होती है, स्वस्थ, बीमारी, मालदारी, ग़रीबी, हर चीज़ उसकी तक़दीर एवं हिकमत के अनुसार। मुसलमान पर अनिवार्य है कि वह इस पर राज़ी हो, क्योंकि तक़दीर अल्लाह ही निर्धारित करता है।

महान अल्लाह ने कहा है : "निश्चय हमने प्रत्येक वस्तु को उत्पन्न किया है एक अनुमान से।" सूरा अल-क़मर : 49 एक अन्य स्थान में अल्लाह तआला ने कहा है : "आप कह दें

कि हमें कदापि कोई आपदा नहीं पहुँचेगी, परन्तु वही जो अल्लाह ने हमारे भाग्य में लिख दी है।" सूरा अल-तौबा : 51

हमारे साथ वही होगा, जो अल्लाह ने हमारे लिए लिख रखा है।

एक अन्य स्थान में सर्वशक्तिमान अल्लाह ने फ़रमाया है : "कोई प्राणी ऐसा नहीं कि अल्लाह की अनुमति के बिना मर जाए।" सूरा आल-ए-इमरान : 145 ।

मौतों को अल्लाह ने लिख दिया है।

ब्रह्मांड में जो कुछ होता है, संसार में जो कण तक हिलता है और जो भी घटना होती है, वह अल्लाह के ज्ञान में है और उसकी मर्ज़ी, अनुमान, हिकमत एवं निर्धारण के अनुसार होता है।

महान अल्लाह ने कहा है : "तथा उसने प्रत्येक वस्तु की उत्पत्ति की, फिर उसे एक निर्धारित रूप दिया।" सूरा अल-फ़ुरक़ान : 2

उसी पाक अल्लाह ने हर चीज़ को पैदा किया है एवं हर चीज़ के भाग्य को निर्धारित कर दिया है। वह जो चाहता है होता है, और जो नहीं चाहता है, नहीं होता है।

हम मुसलमान के तौर पर अल्लाह की तक़दीरों को मानने पर बाध्य हैं।

इसी तरह मनुष्य अल्लाह के सामने समर्पित होता है।

और अंत में! हम इस्लाम में कैसे प्रवेश कर सकते हैं?

इस्लाम पूरी मानव जाति के लिए अल्लाह का धर्म है, महान अल्लाह ने कहा है: "निःसंदेह अल्लाह के निकट धर्म केवल इस्लाम है।" सूरा आल-ए-इमरान : 19 इस्लाम एक ऐसा धर्म है जिसके अलावा अल्लाह दूसरे धर्मों को स्वीकार नहीं करेगा। "और जो भी इस्लाम के सिवा (किसी और धर्म) को अपनाएगा, उसे उसकी तरफ़ से कदापि स्वीकार नहीं किया जाएगा और वह प्रलोक में घाटा उठाने वालों में से होगा।" सूरा आल-ए-इमरान : 85

इसलिए हर इंसान पर चाहे वह हिंदू हो या न हो अनिवार्य है कि वह इस्लाम को अपनाए।

केवल इस्लाम में जहन्नम से निजात एवं अल्लाह की ख़ुशी और जन्नत की प्राप्ति है।

इस्लाम में प्रवेश करना सभी नेमतों में सबसे बड़ी नेमत है, बल्कि यह आपके अस्तित्व की सबसे बड़ी एवं महत्वपूर्ण चीज़ है।

वास्तव में इस्लाम प्रवृत्ति एवं बुद्धि और वेदों की तरफ लौटना है।

इस्लाम ग्रहण करना बहुत आसान है, इसमें किसी अनुष्ठान या औपचारिकता की आवश्यकता नहीं है। बस यह है कि इंसान दोनों गवाही के कलेमा (शब्दों) को अपने मुँह से बोल दे, और वह इस प्रकार है: "أشهد أن لا إله إلا الله وأشهد أن محمدًا رسول الله" (कि मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई सत्य पूज्य नहीं है, और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं)।

और इस प्रकार वह मुसलमान हो जाता है।

इसके बाद वह इस्लाम पर अमल करना शुरू करे।

मैं वेबसाइट इस्लाम हाउस को फॉलो (अनुगमन) करने की नसीहत करता हूँ। हर व्यक्ति अपनी भाषा में इसमें मौजूद सामग्री से लाभ उठा सकता है। इससे एक नया मुसलमान यह सीख सकता है कि वह इस्लाम को अपने जीवन में कैसे उतारे?

वेबसाइट की लिंक: https://islamhouse.com/ar/

विषय सूची